पढ़ई तुँहर पारा (मुहल्ला क्लास)

सामुदायिक विद्यालयों
हेतु
मैनुअल
अगस्त-2020

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग

2020

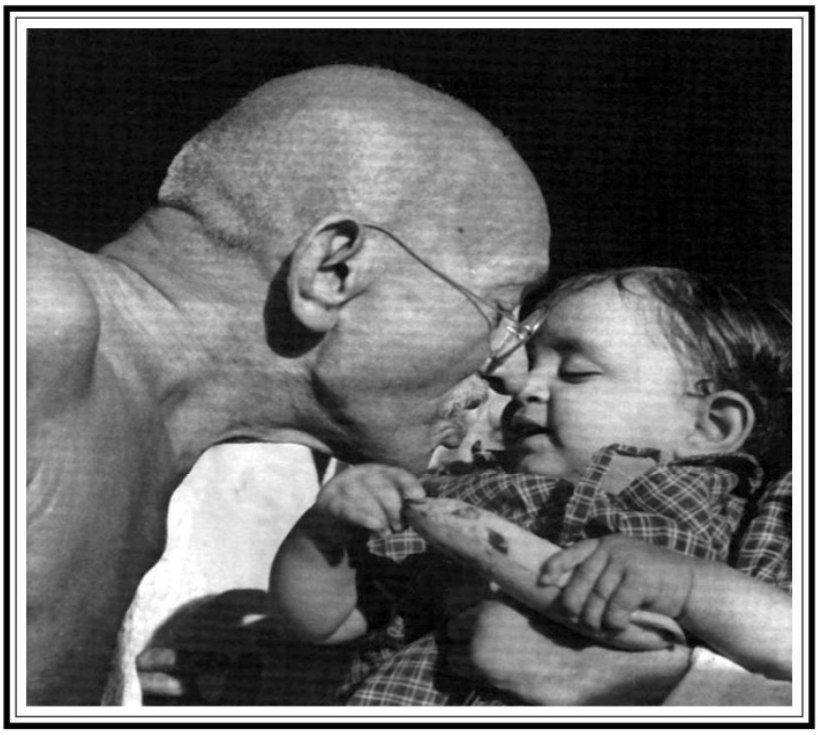

विद्यार्थियों को ऐसी तालीम दी जानी चाहिए जिससे वे संसार के महान धर्मों को आदर के साथ सीख सकें।
-महात्मा गांधी

राष्ट्रगीत
वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्।

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,

शस्यश्यामलां मातरम्। वन्दे मातरम्।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,

फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,

सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्,

सुखदां वरदां मातरम्। वन्दे मातरम्।।

श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय : आनंदमठ

राज्यगीत
अरपा पइरी के धार, महानदी हे अपार

अरपा पइरी के धार महानदी हे अपार,
इन्द्राबती ह पखारय तोर पइँया।
महूँ पाँव परँव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तिसगढ़ मइया।।

सोहय बिन्दिया सही घाते डोंगरी, पहार
चन्दा सुरुज बने तोर नयना,
सोनहा धाने के संग, लुगरा के हरियर रंग
तोर बोली जइसे सुघर मइना।
अँचरा तोरे डोलावय पुरवइया।।
(महूँ पाँव परँव तोर भुइँया।
जय हो जय हो छत्तिसगढ़ मइया।।)

डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा

प्रस्तावना

कोरोना संक्रमण की इस भीषण महामारी में सम्पूर्ण राज्य में तालाबंदी की स्थिति बनी हुई है। स्कूलों में तालाबंदी को देखते हुए बच्चों की पढ़ाई जारी रखने हेतु छत्तीसगढ़ शासन द्वारा ***'पढ़ई तुँहर दुआर'*** *नामक आनलाइन कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है किन्तु सभी बच्चों के पास स्मार्टफोन, इंटरनेट आदि नहीं होने के कारण राज्य के कुछ बच्चे ऑनलाइन कार्यक्रम का लाभ नहीं ले पा रहे हैं, अतः शासन द्वारा मजरा-टोला और बसाहटों में पालक/समुदाय के सहयोग से बच्चों के अध्ययन-अध्यापन हेतु* ***'पढ़ई तुँहर पारा'*** *नामक सामुदायिक विद्यालय प्रारंभ किये जा रहे हैं।*

अब हमारे मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यदि बच्चों को उनके पारा/मोहल्ला अथवा बसाहट में पढ़ाया जा सकता है तो विद्यालय में क्यों नहीं? बच्चों की सुरक्षा हमारा सर्वोपरि उद्देश्य है किन्तु यदि बच्चों की पढ़ाई प्रारंभ न की जाए, तो वे पिछली पढ़ाई भी भूल जायेंगे अर्थात बच्चों की सुरक्षा के साथ-साथ उनकी पढ़ाई भी जरूरी है। जैसा कि हम सभी को विदित है कि विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या बहुत अधिक होती है तथा कमरों की संख्या सीमित। विद्यालय में यदि शिक्षकों एवं कक्षों की सीमित संख्या को नजरअदांज कर विद्यालय प्रारंभ किए जाएँ, तो कोरोना (कोविड-19) संबंधी कठिनाइयाँ सामने खड़ी हो जायेगी। छोटी उम्र के बच्चे बहुत चंचल होते हैं, अधिक देर तक एक स्थिति में रहना इन बच्चों के लिए संभव नहीं है, वे बार-बार सुरक्षा के मानकों की अवहेलना करेंगे। समूह में बातें करते समय एक दूसरे को छूना, बार-बार हाथ न धोना, मास्क का सही उपयोग न करना, जैसी सावधानियाँ एक या दो शिक्षकों के साथ में पूरी नहीं हो सकती। सुरक्षित पेयजल निरन्तर उपलब्ध न होना, निरन्तर स्वच्छ और सुरक्षित शौचालय ये कुछ अति आवश्यक सावधानियाँ हैं, जो बच्चों की बड़ी संख्या को देखते हुए प्रतिक्षण विद्यालय में पूरी करना संभव नहीं है। इन स्थितियों को ध्यान में रखते हुए शासन की मंशा है कि पालकों/समुदाय की सतत निगरानी में, स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण में बच्चों की पढ़ाई प्रारम्भ की जाए, अत: 'पढ़ई तुँहर पारा' सुरक्षात्मक मानकों के साथ छत्तीसगढ़ शासन की अभिनव पहल है, जो समुदाय को साथ लेकर बच्चों की पढ़ाई की निरंतरता बनाएं रखेगी और बच्चे आनंद के साथ अपनी पढ़ाई कर सकेंगे।

इस कार्यक्रम ***'पढ़ई तुँहर पारा'*** *के क्रियान्वयन में शिक्षक-सारथी, शिक्षक, प्रधानपाठक, शाला प्रबंधन समिति, विद्यार्थी, प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी आदि सहभागी होंगे। इसके साथ ही समुदाय से विभिन्न सेवा क्षेत्रों, कार्यों, कौशलों से जुड़े सदस्यों को बच्चों के शिक्षण से जोड़ना होगा, जिससे बच्चे समुदाय के अनुभवों का लाभ उठा कर उनसे सीख सकेंगे। इस मैनुअल में कुछ सुझावात्मक अतःक्रियाएँ भी सुझाई गई हैं।*

हम सभी आपसी सहयोग से शिक्षा को बच्चों के पारा/मोहल्ले तक पहुँचाने में सफल होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।
शुभकामनाओं सहित।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुक्रमणिका

1. सामुदायिक सहभागिता (Community Participation)	1
2. बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण (Multi Grade Multi Level Teaching)	4
3. पीयर लर्निंग (Peer Learning)	7
4. सीखने की दक्षता (Learning Competency)	10
5. गतिविधि आधारित शिक्षण (Activity Based Teaching)	20
6. वर्क शीट और आकलन के उपकरण (Work Sheet and Assessment Tools)	26
7. स्थानीय साँस्कृतिक गतिविधियों द्वारा विद्यालयीन पाठ्यक्रम का निर्माण (Building School Curriculum through Local Cultural Activities)	31
8. समुदाय के साथ अन्तःक्रिया (Interaction with Community)	33

सामुदायिक सहभागिता
(Community Participation)

मानव समुदाय अपने आदर्शों, भावो, संवेगों तथा क्रियाओं को अपनी पीढ़ियों को हस्तांतरित करते हुए स्वयं की अस्मिता बनाए रखता है। समुदाय, देश, काल एवं परिस्थिति के अनुकूल अपनी कुछ परम्पराएँ, विचारधाराएँ, आदर्शों तथा मूल्यों में परिवर्तन कर नवीन आदर्शों व विचारधाराओं को अपनाता है। समुदाय अथवा समाज यह कार्य शिक्षा के माध्यम से करता है। समुदाय स्वयं को जीवित रखने के लिए विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना करता है और उनसे यह अपेक्षा करता है कि वे बालकों (विद्यार्थियों) में उन गुणों को विकसित करे जिन्हें हासिल कर वे समुदाय के विभिन्न क्रियाकलापों में भागीदारी कर सके और समायोजित हो सकें। इससे स्पष्ट है कि विद्यालय का सबसे महत्वपूर्ण दायित्व यह है कि वह बालक तथा बालिकाओं को समाज की आवश्यकताओं, आदर्शों, विचारधाराओं एवं परम्पराओं आदि से अवगत कराए तथा उनमें समुदाय को उन्नत एवं समृद्ध बनाने के लिए जिज्ञासा उत्पन्न करें।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समुदाय शिक्षा की समुचित व्यवस्था किए बिना जीवित नहीं रह सकता और न ही शैक्षिक संस्थाएँ समुदाय की आवश्यकताओं को पूर्ण किए बिना स्थायी बन सकती है। विद्यालय को अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु समुदाय में उपलब्ध समस्त संसाधनों का उपयोग करना आवश्यक है। बच्चों की शिक्षा के लिए शिक्षक के साथ-साथ पालक और समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक, पालक और समुदाय के बिना समुचित शिक्षा की कल्पना नहीं किया जा सकता है। अतः समुदाय का यह उत्तरदायित्व है कि वह अपने समस्त साधनों द्वारा विद्यालय के सभी कार्यों में सहभागी बने।

समुदाय की सहभागिता क्यों?

यदि बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा नहीं मिली तो उसके प्रभाव बच्चों के साथ पालकों व परिवारों पर भी पड़ता है। इसका प्रभाव समाज और समुदाय में भी पड़ता है। आखिर समुदाय क्या चाहता है? यही कि-

1. संपूर्ण शिक्षित गाँव/शहर।
2. सबके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा।
3. स्वावलंबी, आत्मविश्वासी, निर्णय समर्थ एवं सफल नागरिकों का निर्माण करना।

बच्चों के शिक्षा के लिए समुदाय और विद्यालय का परस्पर एवं जीवंत सहयोग आवश्यक है। जिस तरह विद्यालय को समुदाय के प्रति उत्तरदायी तथा शिक्षा के माध्यम से समुदाय के चहुँमुखी विकास के लिए प्रतिबद्ध होना आवश्यक है, उसी तरह समुदाय को भी विद्यालय और बच्चों को अपना समझना आवश्यक है। अतः समुदाय को शिक्षा का केन्द्र बनना होगा।

आवश्यकतानुसार समुदाय ने अपने विकास के लिए कई बड़े-बड़े कार्य करके दिखाये हैं जैसे - कभी पहाड़ियों को तोड़कर दुर्गम रास्ता को सुगम बनाया है तो कभी नदी - नालो में आवागमन के लिए पुल बनाए हैं। इस तरह अनेक कार्य कर इतिहास रचा है। यदि समाज संकल्प ले तो ऐसा कोई असंभव कार्य नहीं जिसे संभव न कर सके। यही विश्वास समुदाय को सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरित करता है। अतः बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित करना समुदाय की सर्वप्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए।

समुदाय की सहभागिता कहाँ?

यहां हम उन संभावनाओं की तलाश करेंगे जहां समुदाय बच्चे की शिक्षा के लिए मदद कर सकता है:-

1. **स्थान और क्षेत्र का चिन्हांकन करने में :-** सबसे पहले हमें उस क्षेत्र (गली, मोहल्ला आदि) का चिन्हांकन करना होगा जहाँ बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करना है। इसके बाद वह कौन सा स्थान/जगह होगा जहाँ बच्चों को बैठाकर शिक्षण/अधिगम की प्रक्रिया प्रारंभ करना है, अर्थात एक अस्थायी सामुदायिक शिक्षा केन्द्र का चिन्हांकन करना होगा। इन स्थानों का

चिन्हांकन एवं व्यवस्था करने में समुदाय मदद कर सकता है। यह स्थान निम्नाकित हो सकते हैं -

- सामुदायिक भवन
- सामाजिक भवन
- धार्मिक स्थल या चौपाटी
- किसी व्यक्ति का मकान, जो स्वेच्छा से उपयोग करने के लिए तैयार हो।

2. बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित करने में:- सामुदायिक शिक्षा केन्द्र के चिन्हांकन होने के बाद उस स्थान पर बच्चों को लाने की जिम्मेदारी भी सुनिश्चित करना होगा। यह जिम्मेदारी समुदाय ले सकता हैः-

i. माता/पिता/पालक की मदद से
ii. उस मुहल्ले/वार्ड के जनप्रतिनिधियों की मदद से
iii. बुजुर्ग पुरूष एवं महिलाओं की मदद से
iv. पढ़े - लिखे युवक/युवतियों की मदद से
v. स्व-सहायता समूह के सदस्यों की मदद से
vi. सेवानिवृत्त शासकीय/अशासकीय व्यक्तियों की मदद से
vii. सेवारत् शासकीय/अशासकीय व्यक्तियों की मदद से

3. बच्चों की सुरक्षा व्यवस्था - बच्चों को घर से जिस स्थान पर शिक्षण व्यवस्था होगा उस स्थान तक लाने एवं वापस घर तक पहुँचाने की व्यवस्था भी सुनिश्चित करना होगा। समुदाय की सहायता से यह व्यवस्था की जा सकती है।

4. कोरोना संक्रमण हेतु बचाव के उपाय :- इस हेतु शासन प्रशासन तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय - समय पर जारी किए गए दिशा निर्देशों का पालन करने में समुदाय सहायता कर सकेगाः-

i. केन्द्र पर अध्ययन-अध्यापन के समय सोशल डिस्टेशिंग का पालन करना।
ii. बच्चों /शिक्षक/समुदाय के लोगों को मास्क/फेस कव्हर लगाना अथवा कपड़ा से चेहरा को ढ़कना।
iii. बार-बार मुंह व चेहरे पर हाथ न लगाए।
iv. भीड़ वाले जगहों पर जाने से बचें।
v. सेनेटाइजर/हैण्डवाश/साबुन की व्यवस्था करना तथा नियमित अन्तराल में इसका उपयोग सुनिश्चित करना। कक्षा प्रारंभ करने के पूर्व एवं कक्षा समाप्ति पश्चात् घर जाने के पहले सेनेटाइज करना।
vi. शिक्षक अधिगम स्थान की साफ-सफाई की व्यवस्था करना।

उपरोक्त कार्य के लिए समुदाय के लोगों से चर्चा कर आवश्यक उपाय करना।

5. शिक्षण अधिगम स्थान पर आवश्यक वस्तुओं/सामग्रियों की व्यवस्था करने में :-

i. **ब्लैक बोर्ड आदि की व्यवस्थाः-** ब्लैक बोर्ड, चाक आदि की व्यवस्था करना होगा। यदि ब्लैक बोर्ड न बनाया जा सके तो रोल बोर्ड का भी उपयोग सुगम एवं आसानी से किया जा सकता है।
ii. बच्चों के बैठने के लिए टाट पट्टी या फर्नीचर की व्यवस्था कर सकते हैं, साथ ही बच्चे स्वयं अपने घर से चटाई आदि ला सकते हैं।

i. पीने के पानी और हाथ धोने के पानी की व्यवस्थाः- बच्चों के लिए पीने की पानी की व्यवस्था करना होगा। इस हेतु पास के घरों से बर्तन एवं गिलास की व्यवस्था आसानी से किया जा सकता है। यदि पास में हैण्डपम्प हो तो अधिक सुविधा होगी।

ii. बारिश से बचने के भी उपाय करना होगा।

समुदाय कैसे मदद कर सकता है?-

1. अध्ययन-अध्यापन में सहभागिता :- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भौतिक एवं मानवीय संसाधन की आवश्यकता होती है, इन दोनों संसाधनों में समुदाय मदद कर सकता है।

2. भौतिक संसाधनः- विभिन्न विषयों के अध्ययन-अध्यापन में विभिन्न सामग्रियों (शिक्षण सहायक सामग्री) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये सामग्रियाँ परिवेश, घरों आदि से मिल सकता है। जैसे-

गणित विषय के लिए:- बीज, पत्ती, कंकड़, कँचा आदि।

पर्यावरण विषय हेतु:- आस-पास के स्थान का अवलोकन जैसे- पेड़-पौधे, तालाब, नदी, नाले।

जो सामग्री सुविधा पूर्वक एवं सरलता पूर्वक उपलब्ध हो सकता है उन सामग्रियों की व्यवस्था करने में समुदाय सहायता कर सकता है। अतः ऐसी सामाग्रियों की विषयवार सूची तैयार कर लेनी चाहिए जिससे इन सामग्रियों की व्यवस्था समुदाय की सहायता से किया जा सके।

3. मानवीय संसाधन:- अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया में भी समुदाय के लोगों से सहायता ली जा सकती है-

(i) बढ़ई /कारीगर आदि अपने कला के बारे में जानकारी दे सकते हैं। वे गणित में जोड़ना, घटाना, लम्बाई मापना आदि की जानकारी दे सकते हैं।

(ii) पढ़े-लिखे लोग समय निकालकर अध्यापन कार्य में मदद कर सकते हैं।

(iii) बुजुर्ग पुरुष-महिलाएँ अपने अनुभव/संस्कृति/परंपरा आदि की जानकारी कहानियों के माध्यम से दे सकते हैं।

(iv) महिलाएँ रसोई की बात/ज्ञान दे सकती हैं।

(v) जनप्रतिनिधि अपने अनुभव बता सकते है।

(vi) सेवानिवृत्त शासकीय/अशासकीय सेवक भी अपनी सेवा दे सकते है।

(vii) सेवारत् शासकीय/अशासकीय सेवक भी समय-समय पर अपनी सेवा दे सकते है।

उपर्युक्त कथन इस ओर ध्यान आकर्षित करता है कि शिक्षा के प्रति सभी नागरिकों को अपने-अपने कर्तव्यों, दायित्वों का निर्वहन करना आवश्यक एवं अनिवार्य है। वर्तमान समय में कोरोना महामारी का संक्रमण तेजी से फैल रहा है। ऐसी स्थिति में बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूल खोलना और बच्चों को स्कूल में लाने की संभावनाएं कम ही दिखाई देती है। यदि बच्चों को स्कूल तक नहीं लाया जा सकता तो मोहल्ला/टोला में बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था अवश्य की जा सकती है, तो आइए शिक्षा के इस महाकुंभ में आहुति देने के लिए हम तत्पर हो जायें।

===000===

बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण
(Multi Grade Multi Level Teaching)

शैक्षिक परिदृश्य में प्रायः सभी शालाओं की सभी कक्षाओं में अध्ययनरत बच्चों के स्तर भिन्न-भिन्न होते हैं, वास्तव में बच्चों के स्तरों में भिन्नता का कारण उनके सीखने की गति में भिन्नता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि प्रत्येक बच्चे के सीखने की गति अलग-अलग होती है यहां तक कि अलग-अलग विषयों के लिए भी एक ही बच्चे की गति अलग-अलग हो सकती है, जिससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया बाधित होती है तथा शिक्षा के प्रति बच्चों का रुझान कम होने लगता है। अतः प्रत्येक बच्चा प्रत्येक विषय को अपनी सीखने की गति से सीखे, यह अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति के माध्यम से किया जा रहा है।

इस पद्धति में सीखने की प्रक्रिया में बच्चे स्वतंत्र रुप से प्रतिभागी होते हैं तथा अपनी गति से सीखते हुए, स्वयं का मूल्यांकन करते हुए सुगमता पूर्वक अपेक्षित कौशल को प्राप्त करते हैं। यदि किसी कक्षा में शिक्षक उपलब्ध नहीं है तब भी बच्चे के सीखने की प्रक्रिया निरंतर बनी रहती है। कोई बच्चा यदि लंबी अनुपस्थिति के बाद कक्षा में उपस्थित होता है तो वर्तमान शिक्षण पद्धति में, उसे पूरी कक्षा जिस स्तर पर है, उसी स्तर से सीखना होता है, जिसके कारण वह अन्य विद्यार्थियों से पिछड़ जाता है और पढ़ाई के प्रति उसकी रुचि धीरे-धीरे खत्म होने लगती है। किन्तु इस पध्दति में बच्चा जिस स्तर को छोड़कर गया था उसी स्तर से सीखना प्रारंभ कर सकता है। इस पद्धति में शामिल गतिविधियों से बच्चों में सामाजिक, सांस्कृतिक ज्ञान तथा वैज्ञानिक सोच का विकास होता है, साथ ही समुदाय भी विद्यालय से जुड़ता है। इसी प्रकार इसमें सीखने-सिखाने का एकमात्र स्रोत शिक्षक न होकर बच्चा सहपाठी, समुदाय, परिवेश होता है साथ ही वह स्वयं से भी सीखता है।

बहुकक्षा – बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति क्या है ?

शिक्षक द्वारा एक ही समय में एक से अधिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को एक साथ एक कक्षा में पढ़ाया जाता है, इस स्थिति को बहुकक्षा शिक्षण कहा जाता है, परन्तु आपने यह भी देखा होगा कि एक कक्षा के सभी बच्चे अगल-अलग स्तर पर होते हैं, अर्थात् उनके सीखने की गति भी अलग अलग होती है, यदि सीखने के अलग अलग स्तर वाले बच्चों को एक साथ बैठाकर सीखाने का प्रयास किया जाए तो यह बहुस्तरीय शिक्षण होगा।

बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति क्यों?

- प्रत्येक बच्चे को अपनी गति से सीखने का अवसर/स्वतंत्रता होगी।
- बच्चों में स्वयं सीखने की क्षमता का विकास होगा।
- बच्चे सीखने की प्रक्रिया में परस्पर सहभागी बनेंगे।
- शिक्षक मार्गदर्शक/सुविधादाता की भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे।
- बच्चों का सामाजिक, सांस्कृतिक ज्ञान तथा वैज्ञानिक सोच समृध्द होगी।
- बच्चे ज्ञान को व्यवहारिक तरीके से अर्जित कर सकेंगे तथा अर्जित ज्ञान का व्यवहारिक उपयोग कर सकेंगे।
- सीखने की प्रक्रिया में समुदाय की सहभागिता भी सुनिश्चित होगी।
- बच्चों का विद्यालय के प्रति आकर्षण बढ़ेगा जिससे शालाओं में नियमित ठहराव सुनिश्चित होगा।
- बच्चों की सीखने के प्रति तत्परता एवं रूझान बढ़ेगा जिससे शैक्षिक गुणवत्ता में वृध्दि होगी।
- बच्चा स्वमूल्यांकन कर सकेगा तथा परीक्षा के प्रति उसका भय समाप्त होगा।
- शिक्षकों के शिक्षण कौशल का विकास होगा।

- शिक्षक प्रत्येक बच्चे के स्तर एवं सीखने की गति को पहचान कर तद्अनुरुप उसे आवश्यक सहयोग प्रदान कर सकेंगे।

- शिक्षक अध्ययन-अध्यापन व मूल्यांकन में आवश्यकता के अनुरूप तकनीक अपनाने हेतु स्वतंत्र होंगे।

- बच्चों पर बस्ते का बोझ कम होगा साथ ही वह मानसिक दबाव से मुक्त होगा।

बहुकक्षा – बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति कैसे –

छत्तीसगढ़ शासन के पारा, मजरा, टोला और मोहाल्लों में गाँव के स्वयं सेवियों तथा युवा साथियों के माध्यम से बच्चों को उनके पास जाकर सिखाने का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण कदम है, परन्तु जैसा कि उल्लेखनीय है जब किसी भी पारा या मोहल्ले में स्वयंसेवी जायेंगे तो वहां केवल एक ही कक्षा के और सीखने के एक ही स्तर के बच्चे नहीं होंगे, बल्कि वहां अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ने वाले, सीखने के अलग-अलग स्तर के बच्चे उनके पास आएंगे। इन सभी बच्चों के सीखने की गति भी एक ही कक्षा में अलग-अलग विषयों में अलग-अलग हो सकती है। ऐसे में इन बच्चों को सीखने के लिए बहुकक्षा – बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति (MGML) का प्रयोग काफी मददगार हो सकता है, इस हेतु-

निम्न क्षेत्रों में योजना बनानी होगी –

1. **समय का नियोजन** – इसमें केन्द्र के लिए मिलने वाले समय को केन्द्र में कराई जाने वाली गतिविधियों में इस तरह बांटना होगा कि समय का अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके।

2. **स्थान का नियोजन -** अलग-अलग केन्द्रों में अलग-अलग तरह की परिस्थितियां होंगी, जैसे कही समुदाय एकाध कक्ष उपलब्ध करा सकता है। कहीं बरामदा या दालान होगा तो कही पेड़ की छाया में भी केन्द्र संचालन करना पड़ सकता है। हर परिस्थिति के अनुरूप अलग तरह की योजना बनानी होगी।

3. **लर्निंग कॉम्पिटेन्सीज (दक्षता) का नियोजन -** प्रत्येक केन्द्र में साप्ताहिक पाठ्यक्रम उपलब्ध कराया जावेगा। साप्ताहिक पाठ्यक्रम के आधार पर लर्निंग दक्षताओं का नियोजन करना होगा।

कुछ कार्य निम्नानुसार किये जा सकते हैं-

- ऐसी दक्षताओं के समूह बना लें, जिन्हें कक्षा 1 से 5 में एक साथ गतिविधियों द्वारा कराया जा सके। जैसे - सुनना-बोलना, शब्द भण्डार बढ़ाना, अभिव्यक्ति, सृजनात्मक गतिविधियां, पर्यावरणीय दक्षताएं, अवलोकन, सूची बनवाना, सारिणी बनवाना आदि। इससे हर स्तर के लिए कम समय में अधिक दक्षताओं को प्राप्त किया जा सकेगा।

- किसी एक कक्षा की कोई कहानी, कविता या खेल, सभी बच्चों को एक साथ कराके अलग-अलग कक्षाओं से उनके स्तर के अनुसार अभ्यास कार्य करने को दे दें। जैसे - चिड़िया की कोई कविता आपने सुनाई, सभी बच्चों ने हावभाव से दोहराया, इसके बाद तीन कक्षा (1, 2, 3) बच्चों को अलग-अलग स्तर के काम दे सकते हैं -

कक्षा 1- बच्चों से पूछें क्या उन्होंने चिड़िया देखी है? कौन-कौन से रंगों की होती है? कहां रहती है? क्या खाती है? कैसे बोलती है? उड़ने का अभिनय करवाना, चिड़िया का चित्र बनवाना आदि।

कक्षा 2- चिड़िया का चित्र बनवाना व नाम लिखवाना।

कक्षा 3- चिड़िया के बारे में 5 वाक्य लिखवाना। जैसे - अगर आप चिड़िया होते तो क्या-क्या करते, कहाँ-कहाँ जाते आदि पर चर्चा करना।

बहुकक्षा – बहुस्तरीय शिक्षण निम्नानुसार करेंगे -

1. स्वयं सेवी (शिक्षक) द्वारा
2. मॉनीटर द्वारा सहायता
3. समूह शिक्षण या समूह कार्य
4. स्व अधिगम एवं अभ्यास कार्य
5. कक्षा के बाहर की गतिविधियां
6. पीयर ग्रुप (विषय मित्र/गली मित्र)
7. स्थानीय स्रोत व्यक्तियों की सहायता द्वारा

समूह शिक्षण या समूह कार्य - बच्चों को समूह में कार्य करने के लिए अवसर देना अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि इसमें -

- बच्चों को सीखने के अधिक मौके मिलते हैं।
- सभी बच्चे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
- शिक्षक को एक-एक बच्चे पर अधिक ध्यान देने का मौका मिलता है।
- बच्चों को एक-दूसरे से सीखने के अधिक मौके मिलते हैं।
- बच्चे समूह में कार्य करना सीखते हैं।
- बच्चों की विशिष्ट कमजोरियों और कठिनाईयों को पहचानने के अधिक मौके मिलते हैं।
- समूह बनाकर सुधारात्मक प्रयास आसानी से किये जा सकते हैं।

स्व अधिगम एवं अभ्यास कार्य - बच्चों को स्वयं पढ़कर, देखकर या करके सीखने के मौके देना अत्यन्त आवश्यक है कुछ गतिविधियां जैसे-चित्र बनवाना, रंग भरवाना, गिनती सिखाने के लिए एक-एक से मिलान करवाना, अक्षर व अंकों पर ऊंगली फिरवाना, कहानी/चित्रों को क्रमबद्ध रूप से लगवाना आदि।

कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ - कुछ गतिविधियाँ मैदान में या आसपास के परिवेश में ले जाकर कराई जा सकती है। इसमें आप अपने मार्गदर्शन के अतिरिक्त मॉनीटर व स्थानीय व्यक्तियों की सहायता ले सकते हैं।

संगी साथियों द्वारा शिक्षण - एक बच्चा अपने साथी से पूछना, उससे बात करना ज्यादा आसान समझता है, बजाय आपसे पूछने के। क्योंकि वह उसके साथ ही पढ़ता है। इस प्रकार एक-दूसरे से सीखने में परस्पर सहयोग व सहायता देने की भावना विकसित होती है। इसलिए कक्षा में विषयवस्तु पर आधारित बातचीत करने या पूछने को प्रोत्साहित करना चाहिए।

स्थानीय स्रोत व्यक्तियों की सहायता द्वारा - बहु कक्षा शिक्षण व्यवस्था में समुदाय की सहभागिता बहुत उपयोगी होती है। आप यह सहयोग पढ़ाने, भ्रमण, सजावट, सामग्री निर्माण आदि में किया जा सकता है। अवकाश प्राप्त व्यक्तियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, पढ़े लिखे अभिभावकों एवं युवा जिनके पास समय हो आदि की सहायता ले सकते हैं, स्थानीय लोग, लुहार, बढ़ई, डॉक्टर, पोस्टमेन, ग्रामीण विस्तार अधिकारी आदि को केन्द्र में आमंत्रित किया जाना चाहिए।

===000===

पीयर लर्निंग
(Peer Learning)

अध्ययन-अध्यापन की जरूरतों के अनुसार एक ही कक्षा के या विभिन्न कक्षाओं के छात्रों के समूह बनाकर सीखने की प्रक्रिया ही पीयर ग्रुप लर्निंग है। पीयर ग्रुप लर्निंग में अलग-अलग स्तर के दो विद्यार्थियों की सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में एक दूसरे के पूरक होते हैं।

पीयर लर्निंग/ग्रुप लर्निंग क्यों जरूरी है ? - बच्चों को समूह में कार्य करने के मौके देना अत्यंत आवश्यक है। समूह में कार्य करने से बच्चों में नेतृत्व क्षमता का विकास तो होता ही है साथ ही अभ्यास और पुनरावृत्ति के भी अनेक मौके मिलते हैं।

- बच्चों के सीखने के अधिक मौके उपलब्ध कराने हेतु।
- सभी बच्चों की सक्रीय भागीदारी के लिए।
- एक दूसरे से सीखने के पर्याप्त अवसर प्रदान करने के लिए।
- सुधारात्मक प्रयास को आसान बनाने के लिए।

पीयर लर्निंग/ग्रुप लर्निंग कैसे करे ? - पीयर लर्निंग/ग्रुप लर्निंग निम्नानुसार तरीके से कराया जा सकता है-

बच्चे एक-दूसरे की मदद से बहुत तेजी से सीखते हैं। स्वाभाविक रूप से बच्चों को अपने साथियों से सीखना आसान लगता है। पीयर लर्निंग से बच्चों को अपनी गति से और अपने वांछित समय में सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं। पीयर ग्रुप लर्निंग में आवश्यकताओं के अनुरूप जोड़ियाँ बनाई जा सकती है। उदाहरण के लिए कक्षा में बच्चों की जोड़ी, स्कूल के बच्चों की जोड़ी, आवश्यकतानुसार जोड़ी आदि।

एक ही कक्षा के बच्चों की जोड़ी - इसमें एक ही कक्षा के दो बच्चों की जोड़ी की अपेक्षा की जाती है। कक्षा में बच्चों को विभिन्न स्तरों में विभाजित किया गया है। उनकी अलग-अलग आकलन की क्षमताएं एक-दूसरे के अध्ययन के लिए पूरक होती हैं। जिन बच्चों की कक्षा में अच्छी अध्ययन गति है, उनका उपयोग उनकी तुलना में पिछड़ने वाले बच्चों के लिए किया जा सकता है। कक्षा में होने वाले दैनिक अभ्यास में इन बच्चों का हमेशा एक-दूसरे की मदद होती है।

अलग-अलग कक्षाओं के बच्चों की जोड़ी - बड़ी कक्षा वाले के साथ छोटी कक्षा वाले छात्र की जोड़ी। बहु कक्षा शिक्षण वाले स्कूलों में इसका उपयोग अधिक व्यापक रूप से किया जा सकता है। जब छात्र घर पर होते हैं तो कक्षा का सहपाठी पड़ोसी भी हो ऐसा जरूरी नहीं है। इसलिए स्कूल की जोड़ी बनाते समय पड़ोसियों की जोड़ी बनाना अच्छा हो सकता है। पड़ोसियों की जोड़ी गली मित्र के रूप में भी काम करता है। अर्थात स्कूल के बाद भी बच्चे एक दूसरे से सीख सकते हैं।

आवश्यकता अनुसार जोड़ी - आपसी चर्चा, दो लोग मिलकर की जाने वाली परियोजना, या कोई लक्ष्य बातें पूरी करनी हो तो ऐसी जोड़ी बनाई जा सकती है।

ग्रुप लर्निंग - अध्ययन अध्यापन की जरूरतों के अनुसार एक ही कक्षा के या विभिन्न कक्षाओं के छात्रों का समूह बनाना। समूह में तीन से चार छात्र होते हैं। मिश्रित अध्ययन गति वाले बच्चों का समूह होने से छात्रों को एक दूसरे का लाभ होता है। छात्रों को शिक्षक की मदद के बिना अंतहीन सीखने का अवसर प्राप्त होता है।

विषय मित्र - एक छात्र की दूसरे छात्र से सीखने की गति व पद्धति अध्यापक से सीखने की तुलना में बेहतर होती है। पढाई करते समय आने वाली शंका एवं समस्याओं का हल छात्र अध्यापक से डर या अपमानित होने की भावना से नहीं पूछते। फिर मन में शंकाएं लेकर अध्ययन का सफर शुरू होता है जिस रास्ते में एक पड़ाव आता है जिसका नाम है पिछड़ने की स्थिति। पिछड़ने से बचाने के लिए स्कूलों में विषय मित्र की अवधारणा एक वरदान साबित हो सकती है।

इसके लिए बड़ी कक्षाओं के होशियार और उत्साही छात्रों से मदद लेनी पड़ती है। साधारण तौर पर कुछ छात्रों का चुनाव करके उनके पसंद के विषय की जिम्मेदारी उस छात्र या समूह को दी जाती है। केंद्र में बच्चों के संख्या के आधार पर एक विषय मित्र को दो तीन बच्चों के जिम्मेदारी दी जाए तो वे अपनी पढ़ाई के साथ साथ जिस विषय की जिम्मेदारी दी गयी है उसकी भी पढ़ाई पूरी कर लेते हैं और अपने सहपाठी विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान आवश्यकतानुसार कहीं भी और कभी भी करते हैं। किसी भी कक्षा के छात्र को किसी भी विषय में प्रश्न उपस्थित होता है तो वे संबंधित विषय मित्र से पूछकर शंका का समाधान कर लेते हैं। छात्र बिना किसी डर या हिचकिचाहट के पूछते हैं। विषय मित्रों को भी सिखाने में बहुत खुशी होती है। छात्र शंका का समाधान होने तक बारबार सवाल पूछ सकते हैं।

अध्यापक की अनुपस्थिति या जब वे किसी अन्य कार्य में व्यस्त हों या फिर ऐसा कुछ न भी हो तब भी केवल अलग अनुभव के लिए विषय मित्र छात्रों को आधारभूत संकल्पनाएँ भी सिखा सकते हैं। इस तरीके से अगर छात्रों को अवसर दिये जाएं तो अच्छे परिणाम आते हैं। अध्यापन का अनुभव छात्रों को शिक्षा के साथ साथ आत्मविश्वास प्रदान करता है तथा छात्र सहजता से सीख भी जाते हैं। विषय मित्र प्रक्रिया बच्चों में सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक लगाव उत्पन्न करता है। बच्चों में जनतांत्रिक मूल्यों का विकास करता है।

विषय मित्र प्रक्रिया लागू करते समय चुनौतियाँ -

- विषय मित्र तैयार करने के लिए समय लगता है।
- छात्रों को शिक्षकों से ही सीखने की आदत होती है, इस आदत में कमी लानी होगी।
- प्रारंभ में, विषय मित्र द्वारा पारंपरिक तरीके से विषय को पढ़ाया जाता है। अतः उन्हें सीखने की प्रक्रिया को सिखाने में समय लगता है।
- विषय मित्र के बारे में दूसरे छात्रों से आने वाली शिकायतें। (अधिकारी जैसा व्यवहार, दण्डित करने की आदत)
- विषय मित्र द्वारा दूसरे छात्रों के विरूद्ध की जाने वाली शिकायतें। (मेरी बात नहीं सुनता, प्रश्नों का जवाब नहीं देता, बार-बार सिखाने पर भी नही सीखता, आदि)

चुनौतियों का सामना ऐसे करें -

- कुछ भी नया और सकारात्मक करने में समय लगता है, लेकिन अपने कौशल का उपयोग करके लगने वाली अवधि को छोटा किया जा सकता है।
- छात्र शिक्षक से ही सीखते हैं इस सोच को बदलना। तभी बच्चों की शिक्षक पर निर्भरता कम होगी और यही स्वअध्ययन की शुरूआत होगी।
- विषय मित्र शिक्षकों की मदद के लिए नही बल्कि बच्चों को सहज सीखने के लिए मदद हो इस उद्देश्य से यह प्रक्रिया लागू की जा रही है। जब अन्य बच्चों को पता चलता है कि विषय मित्र उनकी मदद के लिए हैं, तो एक-दूसरे के बारे में शिकायतें बंद हो जाती हैं।
- विषय मित्र प्रक्रिया लागू करने में केंद्र के स्वयंसेवी शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है।
- धैर्य रखें। (यह समझना कि चर्चा, साझेदारी, धींगा-मस्ती, खेलना एक सीखने की प्रक्रिया है।)
- निरंतरता बनाए रखना।
- शुरूआत में बच्चों के साथ ज्यादा समय बिताएं। उन्हें आदत हो जाए तो अपनी भागीदारी कम करते जाना।
- विषय मित्रों और छात्रों को प्रोत्साहित करें।
- प्रत्येक चरण में सूक्ष्म रूप से निरीक्षण करें।

पीयर लर्निंग, ग्रुप स्टडीज और विषय मित्र इन तीनों के उपयोग से छात्रों के स्व-अध्ययन की गति को तेज किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अगला पाठ बच्चों को घर से पढ़ कर आने के लिए कहना। जब बच्चे सुबह स्कूल पहुंचते हैं, तो अपने पीयर के साथ पाठ पर चर्चा करें। कक्षा शुरू होने के बाद, समूह में बैठें और पाठ के अज्ञात भागों को समझें। वास्तविक कक्षा शुरू हो जाने के बाद, पूरी कक्षा एक बड़े समूह के रूप में कार्य करेगी, उसमें शेष प्रश्नों और अनसुलझे क्षेत्रों पर चर्चा करें। इस स्तर पर शिक्षक भी सहभागी हों; इसका मतलब है कि छात्रों को स्व-अध्ययन, पीयर लर्निंग, ग्रुप लर्निंग और विषय मित्र के इस क्रम में सीखना अपेक्षित है।

===000===

सीखने की दक्षता
(Learning Competency)

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को एक सफल व्यक्ति के रूप में तैयार करना है। आज स्कूली शिक्षा में शैक्षिक गुणवत्ता समाज की सबसे बड़ी अपेक्षा है और यदि हम आज बेहतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात करते हैं, तो कई मूलभूत बिन्दुओं पर चिन्तन-मनन की आवश्यकता प्रतीत होती है। आज हमें, ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो विद्यार्थी के ज्ञान और जीवन-मूल्य दोनों का समन्वित विकास कर सके। बच्चों की भाषा अच्छी हो, उनमें चिन्तन-मनन और अभिव्यक्ति क्षमता का सामर्थ्य विकसित हो, उनके अकादमिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक पक्ष को भी समान महत्व मिले। वैसे तो बच्चे अपने साथ बहुत कुछ लेकर विद्यालय आते हैं - अपनी भाषा, अपने अनुभव और दुनियाँ को देखने का अपना नज़रिया आदि।

बच्चे घर-परिवार एवं परिवेश से जिन अनुभवों को लेकर विद्यालय आते हैं, वे बहुत समृद्ध होते हैं। उनकी इस भाषायी पूँजी का इस्तेमाल सीखने-सिखाने के लिए किया जाना चाहिए।

सीखने की रणनीति

किसी भी नई रणनीति में सीखने के चार चरण होते हैं। शुरूआत में जहाँ बच्चों को रणनीति बताने और करके दिखाने की जिम्मेदारी पूर्ण रूप से शिक्षक पर होती है, वहीं आखिरी चरण तक पहुँचते-पहुँचते समझ की यह पूरी जिम्मेदारी बच्चों की हो जाती है। इसे इस चित्र से समझा जा सकता है-

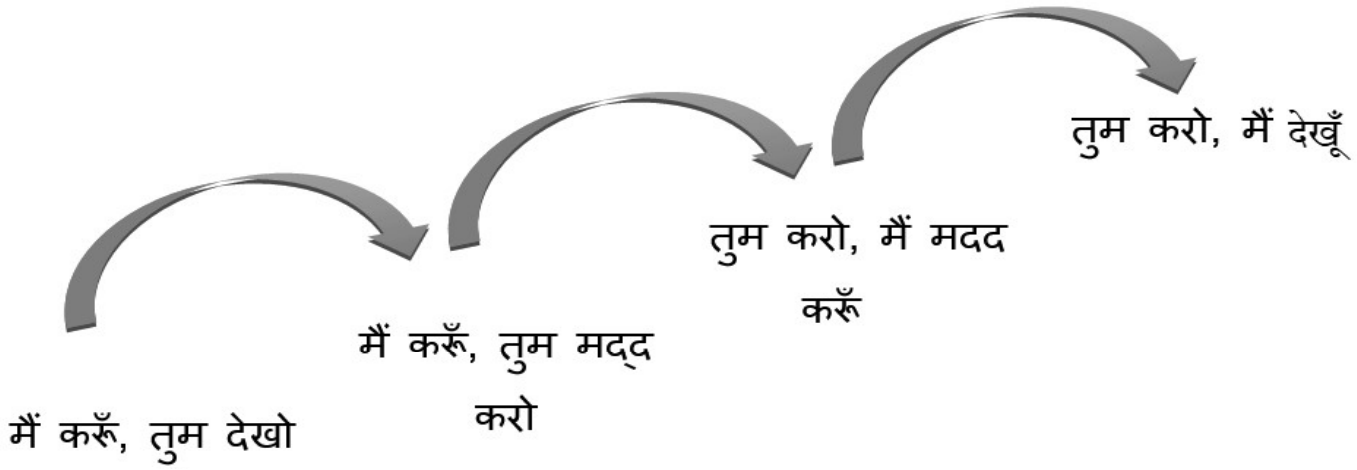

दक्षता क्या है - किसी खास कार्य को सफलता पूर्वक या कुशलता पूर्वक करने की क्षमता को ही दक्षता कहते हैं। दक्षता को विभिन्न परिस्थितियों में आवश्यकतानुसार किसी कार्य को करने की क्षमता, सुघड़ता, गुण, पात्रता, सम्पन्नता, योग्यता, सामर्थ्य आदि भी कहा जाता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पहली बार विद्यालय में आने वाला बच्चा अनेक शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। लिपिबद्ध चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त होती हैं, इसलिए पढ़ने का प्रारंभ अर्थपूर्ण सामग्री से ही होना चाहिए और किसी उद्देश्य के लिए होना चाहिए। यह उद्देश्य कहानी सुनकर-पढ़कर आनंद लेना भी हो सकता है। धीरे-धीरे बच्चों में भाषा की लिपि से परिचित होने के बाद अपने परिवेश में उपलब्ध लिखित भाषा को पढ़ने-समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होने लगती है। भाषा सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं।

सीखने-सिखाने के संबंध में यह एक जरूरी बात है कि बच्चे विभिन्न प्रकार के परिचित और अपरिचित संदर्भों के अनुसार भाषा का सही प्रयोग कर सकें, यह भी जरूरी है कि क्रमशः सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना व अभिव्यक्ति इन पाँचों प्रक्रियाओं में अभिव्यक्ति दे सकें।

बच्चों में दक्षता विकसित करने के उपाय -

अक्षर ज्ञान, गिनती सिखाने से पहले कुछ ऐसे कौशल हैं, जो पहले हर बच्चे को सिखाए जाने चाहिए और यह कौशल गतिविधियों द्वारा सिखाया जा सकता है। उदाहरण -

सुनना

सबसे महत्वपूर्ण कौशल सुनना है। अगर किसी भाषा को हम सीखना चाहते हैं, तो उसे सुनने और बोलने का मौका मिलने पर हम आसानी से उस भाषा को सीख सकते हैं।

बोलना

हमारी पाठ्यपुस्तकों में कहानी की किताबें, पढ़ने की सामग्री राज्य की मानक भाषा में होती है लेकिन बच्चे जिस परिवेश से आते हैं, उसमें बोली-भाषा अलग-अलग होती है। ऐसी स्थिति में बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने के लिए हमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। इतना ही नहीं कई परिवारों में उनकी पहली पीढ़ी पाठशाला में दाखिल होती है, तो बच्चे और उनके माता-पिता के लिए शिक्षा, शाला अनुशासन, पढ़ाई आदि बातों का महत्व समझने में कठिनाई होती है। बच्चे के विद्यालय पहुँचने के उपरांत उसे अच्छी तरह से सीखना है और उस भाषा में खुद को व्यक्त भी करना है। अतः बच्चे के सामने रूचिकर व स्तरीय सामग्री प्रस्तुत करना शिक्षक के लिए एक चुनौती भी है।

पढ़ना

पढ़ने का कौशल चरणबद्ध तरीके से विकसित होता है, जैसे ही बच्चा तैयार होता है शिक्षक उसे इन चरणों के आधार पर आगे बढ़ाने में मदद करना चाहते हैं। सबसे पहले बच्चा पुस्तकों को पसंद करता है। इसके बाद अक्षरों की पहचान का दौर शुरू होता है। अलग-अलग मिलाकर शब्द बनाने में उसे मजा आता है। इसके बाद बच्चा लयबद्ध भाषा को सुनने और इस्तेमाल करने लगता है।

पढ़ना केवल शब्दों का उच्चारण करना नहीं है, उन्हें समझना, पढ़ने की आवश्यक शर्त है। अतः पढ़ने का बुनियादी मकसद है - 'समझना'।

पढ़कर समझने की क्षमता विकसित कैसे करें –

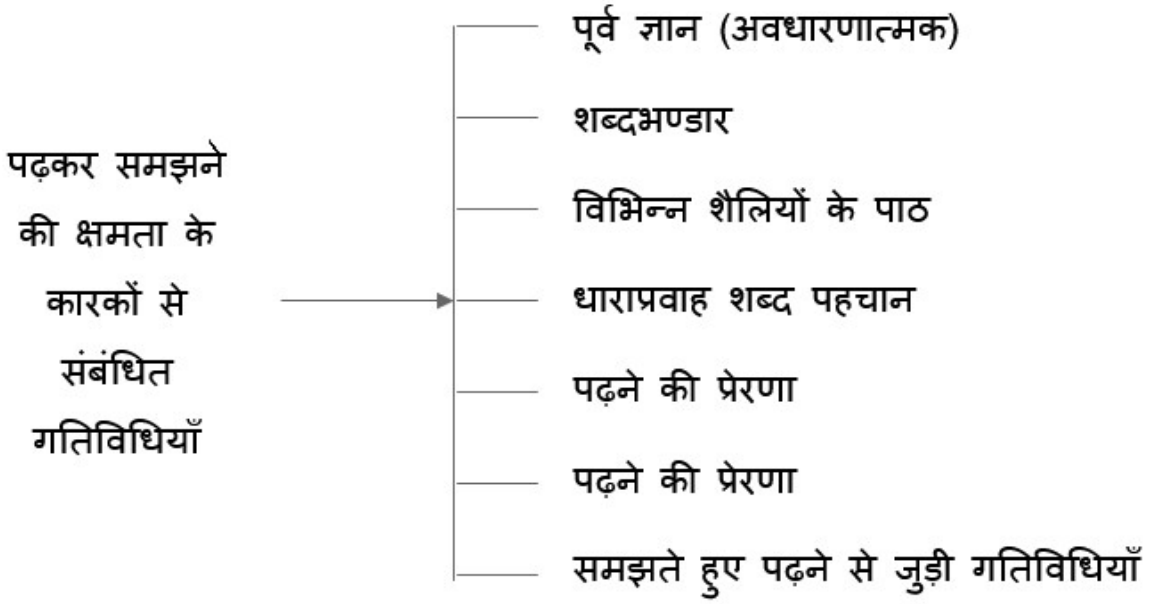

लिखना

यह कौशल प्राप्त करने के लिए बच्चे को अच्छे खासे अभ्यास की जरूरत है। सबसे पहले बच्चा विभिन्न प्रकार की रेखाएँ खींचता है। इस चरण में बच्चे को चित्र बनाने और उसमें रंग भरने को प्रोत्साहित करें। निचोड़ना जैसी क्रियाओं से उसकी माँसपेशियों की ताकत बढ़ती है। वह लिखे हुए नामों को पहचानने लगता है, फिर अक्षरों और अंकों की नकल करता है धीरे-धीरे उद्देश्य युक्त लेखन की शुरूआत होती है।

बच्चों को समझें

जब हम बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की बात करते हैं तो हमें सबसे पहले उन्हें समझने की जरूरत होती है। बच्चों को केवल यह न समझें कि उन्हें हम जो सिखाएँगे, वही सीखेंगे। उनका अपना भी पूर्व ज्ञान तथा अनुभव होता है जिनके आधार पर वे नयी रचना कर सकते हैं। उनकी कुछ रचनाएँ ऐसी भी होंगी जिनके बारे में हम सोच भी नहीं सकते। लेकिन सभी बच्चों के सीखने की गति अलग-अलग होती हैं। उनके मनोभाव भी अलग-अलग होते हैं कि अभी उन्हें सीखने का मन है या नहीं। सभी के विचार और तर्क भी अलग-अलग होते हैं जो सही या गलत या अर्थहीन कुछ भी हो सकते हैं।

हमारी क्या अपेक्षाएँ हैं?

बच्चों में सुनना, बोलना, गतिविधियों में भाग लेना, पढ़ना और लिखना इन दक्षताओं का विकास करना है एवं सीखने में सहायता करनी है-

- सभी बच्चे जो सुना है उसे अपने शब्दों में बता सकें।
- सभी बच्चे बिना झिझक स्पष्ट उच्चारण के साथ बोल सकें।
- सभी बच्चे चित्र देखकर, सोचकर पूरे वाक्य में बोल सकें।
- सभी बच्चे अक्षर पहचानकर सरल शब्द पढ़ सकें।
- सभी बच्चे सरल लेख पढ़ सकें।
- सभी बच्चे प्रतिलेखन कर सकें।
- सभी बच्चे सरल शब्द और सरल वाक्यों का सुनकर लिख सकें।

सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना की आधारभूत दक्षताओं के विकास के लिए निम्नलिखित मूलमंत्रों को ध्यान में रखना होगा-

- बच्चों से दोस्ती करें।
- उन्हें बोलने, पूछने व खुद से गतिविधियाँ करने का मौका दें।
- उन्हें प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।
- उन्हें भरोसा दिलाएँ कि वह अपने मन की बातों को बिना झिझक बोल सकते हैं।
- उन्हें भरोसा दिलाएँ कि अगर उन्होंने गलती की तो आप उन्हें नहीं डांटेंगे।
- आप के चेहरे के हाव-भाव भी ऐसे हों कि जिसे देखकर उन्हें लगे कि, आप उनसे नाराज नहीं हैं।
- ध्यानपूर्वक सुनना, पूर्ण वाक्य में बोलना, ऊँगली रखकर पढ़ना, स्पष्ट उच्चारण के साथ बोलना एवं पढ़ना आदि का अभ्यास शिक्षक निरंतर कराएं।

इसी दिशा में राज्य स्तर पर विशेष प्रयास के पहल हैं, जिसकी सामग्री आपके हाथों में है, बस अब आप सभी से अपेक्षा है कि आप इस सामग्री का बेहतर उपयोग करते हुए प्रदेश के प्रत्येक बच्चे में मूलभूत दक्षताओं के उन्नयन में अपने अथक परिश्रम से बच्चों की दक्षताओं को उत्कृष्ट परिणाम तक ले जाएँगें।

उपर्युक्त उल्लिखित दक्षताओं की प्राप्ति के लिए विषयवार दक्षताओं, कौशलों पर आधारित विषय हिंदी, गणित, पर्यावरण एवं विज्ञान के लिए दो स्तर पर (कक्षा 1 से 5 - स्तर 1, कक्षा 6 से 8 स्तर 2) कुछ अवधारणाएँ निर्धारित की जा रही है। जो कि निम्नानुसार हैं-

भाषा (हिंदी)

चूँकि बच्चे अच्छी खासी विकसित भाषिक व्यवस्था के साथ स्कूल आते हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए स्कूली पाठ्यचर्या में भाषा शिक्षण का उद्देश्य तय किया जाना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य बच्चे को इस तरह से साक्षर बनाना है कि बच्चा समझने के साथ पढ़ने, लिखने व विचारों को व्यक्त करने की क्षमता हासिल कर सके।

विषय हिंदी से निम्नलिखित दक्षताएं विकसित होंगी -

क्र.	*कौशल*	*प्राथमिक स्तर*
1.	*सुनना, सुनकर समझना, बोलना, समझकर बोलना*	*देखी-सुनी रचनाओं, गतिविधियों आदि के बारे में बातचीत करते हुए अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं। कविता कहानी को हावभाव के साथ सुनाते और प्रश्न पूछते हैं।*
2.	*पढ़ना, पढ़कर समझना*	*अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं। पुस्तकालय से अपनी पसंद की पुस्तकें स्वयं चुनकर पढ़ते हैं।* *अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि को समझकर, पढ़कर अपने साथियों के साथ चर्चा करते हैं तथा प्रश्न पूछते हैं।*
3.	*लिखना*	*विभिन्न विषयों पर स्वेच्छा या तय गतिविधियाँ के अंतर्गत भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपने लेखन में/ब्रेल में शामिल करते हैं।* *लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं।* *भाषा की व्याकरणिक इकाइयों की पहचान करते हैं और उसके प्रति सजग रहते हैं।*
4.	*सृजनात्मक प्रयोग*	*विभिन्न विषयों पर अपने अनुभवों को लिखते हैं अपनी कल्पना से कविता, कहानी पत्र आदि लिखते हैं।*

क्र.	कौशल	उच्च प्राथमिक स्तर
1.	*सुनना, सुनकर समझना, बोलना, समझकर बोलना*	*विविध प्रकार की रचनाओं, घटनाओं और मुद्दों को पढ़कर या देखकर अपने अनुभवों को व्यक्त करना, परिचर्चा करना, अपने आसपास के परिवेश, धर्म, जाति, रंग, रीति-रिवाजों के बारे में विविध विधाओं को पढ़कर हाव-भाव के साथ सुनाते हैं और बातचीत करते हैं।*
2.	*पढ़ना, पढ़कर समझना*	*विविध रचनाओं को पढ़कर अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं, बेहतर समझ के लिए परिचर्चा करते हैं, भाषा की बारीकियों को जैसे- लय, तुक, मुहावरे, लोकोक्ति, वर्ण आवृत्ति आदि को समझते हैं, नापसंद या पसंद व्यक्त करते हुए उस पर चिंतन करते हैं, प्रश्न पूछते हैं तथा निष्कर्ष निकालते हैं।*
3.	*लिखना*	*अपने अनुभवों को लेखन की विविध शैलियों से व्यक्त करते हुए नए शब्दों और तरीकों का प्रयोग करते हैं। विभिन्न प्रकार की भाषाई सामग्री को पढ़कर लिखते हैं। विभिन्न संदर्भों में दूसरों की कही गई बातों को अपने ढंग से लिखते हैं।*
4.	*सृजनात्मक प्रयोग*	*नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त कर उसका अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं। विभिन्न मुद्दों की तार्किक समझ रखते हैं एवं पत्र-पत्रिकाओं हेतु लिखित सामग्री एकत्र कर संपादन करते हैं। अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं, दिनचर्या से विभिन्न परिस्थिति-यों पर विभिन्न तरीकों जैसे सोशल मीडिया, नोटबुक आदि पर अपने अनुभव को लिखते हैं।*

पर्यावरण

पर्यावरण अध्ययन को कक्षा 3 से 5 तक ऐसे विषय के रूप में देखा जाता है, जो विज्ञान (प्राकृतिक एवं भौतिक) सामाजिक अध्ययन (प्राकृतिक एवं भौतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक) की अवधारणाओं की समझ निर्मित करता है।

प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण में बच्चों को उनके परिवेश में वास्तविक स्थितियों से जोड़ने में मदद करने, उनके बारे में जागरूक करने, सराहना करने और मौजूदा पर्यावरणीय संवेदनशीलता बनाने की परिकल्पना की गई है। बच्चों के निकटतम परिवेश (प्राकृतिक, भौतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों सहित) से प्रारंभ करके स्वयं, घर, परिवार, पड़ोस, समुदाय की ओर बढ़ते हैं। प्रत्यक्ष जानकारियाँ, परिभाषाएँ और विवरण देने के बजाय बच्चों को अपने परिवेश से सीधे अंतः क्रिया करके स्वयं सीखने की स्थितियाँ निर्मित की जानी चाहिए। बच्चों एवं पर्यावरण के बीच मजबूत संबंध स्थापित करने की पहल की जानी चाहिए।

पर्यावरण अध्ययन से निम्नलिखित दक्षताएं विकसित होंगी -

क्र.	***अवधारणा/दक्षता***	***प्राथमिक स्तर***
1.	*पहचानना एवं अवलोकन करना*	1. *विस्तृत कुटुंब में अपने तथा परिवार के अन्य सदस्यों के आपसी रिश्तों को पहचानना।* 2. *अपने परिवेश में उपलब्ध पेड़, पौधों, जीव जंतुओं तथा उपलब्ध वस्तुओं को सामान्य लक्षणों के आधार पर पहचाना।*
2.	*तुलना करना एवं वर्गीकरण करना*	1. *किसी भी घटना के घटित होने के कारणों को समझना, समानता तथा असमानता को देखना।* 2. *समानता एवं असमानता के आधार पर सूची बनाना।*
3.	*सृजनशीलता का विकास*	*परिकल्पनाएँ बनाना, प्रयोग करना, विश्लेषण करना एवं निष्कर्ष निकालना।*
4.	*समस्या का समाधान*	*समस्याओं को पहचानकर उनका समाधान करना*
5.	*चित्र, चार्ट, मॉडल तथा नक्शा पढ़ना*	1. *अपने आस-पास के क्षेत्रों का भ्रमण कर उस स्थान का पोस्टर, चित्र, मॉडल कोलाज आदि स्थानीय और बेकार सामग्री से बनाते हैं और स्लोगन यात्रा वर्णन आदि लिखते हैं।* 2. *अपने गांव शहर, जिला राज्य के नक्शे को पढ़कर समझते हैं जैसे हमारे जिले उत्तर में कौन सा जिला है/ हमारे राज्य की मुख्य नदियाँ कौन-कौन सी हैं।* 3. *हमारे राज्य के पड़ोसी राज्य कौन-कौन से हैं, अपने राज्य के नक्शे में पर्वत, पठार, नदियाँ आदि को दर्शाते हैं।*

विज्ञान

विज्ञान अध्ययन से निम्नलिखित दक्षताएं विकसित होंगी -

क्र.	*अवधारणा / दक्षता*	*उच्च प्राथमिक स्तर कक्षा 6-8*
1.	*पर्यावरण के घटकों को समझना, सौरमंडल, पृथ्वी पर जीवन, हमारी पृथ्वी एवं पर्यावरण को समझना*	*- पर्यावरण के घटकों की जानकारी* *- पृथ्वी पर जीवन के लिए मूल आवश्यकताओं (भोजन, जल, वायु) की उपलब्धता की जानकारी* *- सौर-परिवार की जानकारी*
2.	*स्वाथ्य एवं स्वच्छता, कितना भोजन, कैसा भोजन की जानकारी*	*- अच्छे स्वास्थ के लिए भोजन की जानकारी* *- विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों की जानकारी* *- विभिन्न प्रकार के रोग एवं उनसे बचाव की जानकारी*
3.	*ऊर्जा के स्त्रोत एवं उष्मा तथा ताप में सम्बन्ध की जानकारी*	*- विभिन्न प्रकार की ऊर्जा स्त्रोतों की जानकारी* *- विभिन्न प्रकार की ऊर्जा के उपयोग की जानकारी* *- उष्मा, ऊर्जा के एक नये रूप की जानकारी*
4.	*पदार्थों की प्रकृति एवं पदार्थों का पृथक्करण की जानकारी*	*- विभिन्न वस्तुएं किनसे बनी हैं की जानकारी* *- पदार्थों के विभिन्न अवस्थाओं की जानकारी* *- पृथक्करण की विधियों एवं आवश्यकता की जानकारी*
5.	*सजीवों में पोषण एवं सजीवों में श्वसन, सजीवों के लक्षण एवं वर्गीकरण की जानकारी*	*- पोधों एवं जंतुओं में पोषण की जानकारी* *- मनुष्य में श्वसन, जंतुओं में श्वसन की जानकारी* *- पौधों में श्वसन की जानकारी* *- सजीवों के लक्षण एवं वर्गीकरण की जानकारी*
6.	*अपशिष्ट और उसका प्रबंधन, खाद्य उत्पादन एवं प्रबंधन, कुछ सामान्य रोग*	*- भिन्न-भिन्न स्थानों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों की जानकारी* *- फसलों के प्रकार, कृषि पद्धतियों की जानकारी* *- सामान्य रोगों की जानकारी एवं रोग कैसे फैलते हैं एवं निदान की जानकारी*

गणित

क्र.	अवधारणा/दक्षता	प्राथमिक स्तर कक्षा 1-5
1-	- संख्याएँ – - शून्य की अवधारणा	- वस्तुओं (मूर्त रूप), चित्रों और प्रतीकों द्वारा गिनना। - शून्य की अवधारणा को समझना। - स्थानीय मान का उपयोग कर संख्याओं को पढ़ना एवं लिखना।
2-	मूलभूत संक्रियाएँ	- संख्याओं को जोड़ना। - संख्याओं को घटाना। - संख्याओं को गुणा करना। - संख्याओं को भाग करना।
3-	मापन	- अमानक इकाई जैसे- अंगुली, बित्ता, कदम आदि से मापना। - वस्तुओं की लम्बाई, भार, धारिता आदि का पता लगाना। - मानक इकाई जैसे- मीटर, सेन्टीमीटर, किलोग्राम से मापना।
4-	आँकड़ों का अभिलेखन	- सूचना एकत्र कर अभिलेखन करना। - आँकड़ों से आरेख बनाना। - आँकड़ों से निष्कर्ष निकालना।
5-	ज्यामितीय आकृतियों की पहचान	2D एवं 3D ज्यामितीय आकृतियाँ- - ज्यामितीय आकृतियों की पहचान करना। - ज्यामितीय आकृतियों की विशेषताओं का वर्णन करना।
6-	सममिती, पैटर्न एवं जगह की समझ	- सममित आकृतियों की पहचान करना। - आकृतियों तथा संख्याओं में पैटर्न की पहचान करना। - ज्यामितीय आकृतियों का परिमाप ज्ञात करना। - ज्यामितीय आकृतियों का क्षेत्रफल ज्ञात करना।

क्र.	अवधारणा/दक्षता	उच्च प्राथमिक स्तर कक्षा 6-8
1-	संख्याएँ	- विभिन्न प्रकार की संख्याओं की पहचान (प्राकृत संख्या, सम/विषम प्राकृत संख्या, पूर्ण संख्या, पूर्णांक, परिमेय संख्याएँ) कर सकेंगे। - संख्याओं पर संक्रियाएँ (जोड़ना, घटाना, गुणा एवं भाग) कर पायेंगे। - संख्याओं के गुणधर्म को समझ पायेंगे।
2-	ज्यामितीय आकृतियों की समझ	2D एवं 3D ज्यामितीय आकृतियाँ- - अपने परिवेश से विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों की पहचान एवं उनकी विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे। - 3D का नेट जाल बना पायेंगे। - ज्यामितीय आकृतियों की विशेषताओं का वर्णन कर पायेंगे।
3-	सममिति की समझ	- विभिन्न सममित आकृति एवं पैटर्न की पहचान कर पायेंगे। - सममित अक्ष एवं नवीन सममित आकृतियों का निर्माण कर पायेंगे।
4-	आँकड़ों की समझ	- आँकड़ों का संकलन, आलेखन एवं निरूपण कर पायेंगे। - औसत ज्ञात करना सीख जायेंगे।
5-	क्षेत्रमिति	- विभिन्न आकृति द्वारा घेरे गए स्थानों की समझ विकसित कर पायेंगे। - परिमाप एवं क्षेत्रफल की गणना कर पायेंगे।

===000===

गतिविधि आधारित शिक्षण
(Activity Based Teaching)

शिक्षा का मूल उद्देश्य, बच्चों में ज्ञान प्राप्त करने की प्रवृत्ति, समझ विकास, कौशल विकास, सकारात्मक सोच, मूल्य और आचरण को विकसित इस तरह से करना है, जिससे उनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके। प्रायः शिक्षा के स्तर पर विकास को दो स्तरों पर देखते हैं जैसे शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक। शैक्षणिक स्तर पर भाषा, गणित, विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, सामाजिक अध्ययन जैसे विषयों पर ध्यान दिया गया है। एक शिक्षक होने के नाते आपके लिये निम्नलिखित बातें महत्वपूर्ण होती हैं -

- शिक्षण पुस्तकों में दिये गये ज्ञान से आगे जाना चाहिये यानि कि ज्ञान का अनुप्रयोग व्यवहार में होना चाहिये।
- अध्यापन कार्य यांत्रिक न होकर मनोरंजक, सक्रिय और सारगर्भित होना चाहिये।
- विषय शिक्षण बच्चों की रूचि को ध्यान में रखकर हो एवं सरल व बोधगम्य अधिगम की प्रविधियां का प्रयोग हो।

गतिविधि आधारित शिक्षण बच्चों को अपने स्वयं के अधिगम अनुभव का प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित करती है, साथ ही यह बच्चों को समूह के रूप में कार्य करने एवं सीखने के नये अनुभव प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अतिरिक्त गतिविधि आधारित शिक्षण बच्चों में विभिन्न सामाजिक कौशलो को विकसित करने एवं भावी जीवन हेतु उन्हें तैयार करने में भी मदद करती है।

गतिविधि आधारित शिक्षण क्या है? - गतिविधि आधारित शिक्षण बच्चों को केवल सुनने एवं नोट्स लेने के विपरीत समस्या-समाधान, स्वतंत्र अवलोकन एवं तथ्यों की जांच जैसी व्यवहारिक क्रियाकलापों के माध्यम से अपने स्वयं के सीखने के अनुभव में सक्रिय रूप से सहभागिता के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षण-अधिगम को रोचक एवं प्रभावी बनाने हेतु गतिविधि आधारित शिक्षण एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक, बच्चों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करता है। इस प्रकार का शिक्षण, विद्यार्थी केन्द्रित होता है, शिक्षक उनके सीखने में सुगमकर्ता (Facilitator) की भूमिका निभाता है एवं उन्हें सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षण हेतु विभिन्न प्रकार के अधिगम अनुभव प्रदान करता है। गतिविधि आधारित शिक्षण-अधिगम एक प्रकार की शिक्षण युक्ति है जिसमें सीखने की प्रक्रिया Learning by Doing होती है, अर्थात् क्रियात्मक पक्ष को प्रमुखता दी जाती है।

गतिविधि आधारित शिक्षण का महत्व - गतिविधि आधारित शिक्षण बच्चों को समस्या-समाधान, अन्वेषण एवं रचनात्मकता आदि कौशलों के विकास हेतु एक महत्वपूर्ण तकनीक है। इसके निम्नलिखित महत्व है-

1. सक्रिय सहभागिता एवं जांच के माध्यम से ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करना। (अन्वेषण)
2. अनुभव के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना। (प्रयोग)
3. प्रस्तुति के माध्यम से बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना। (अभिव्यक्ति)
4. सीखने की प्रक्रिया में आनंद का अनुभव होना।
5. बच्चों को जानकारी/सूचना याद करने में मदद करना।
6. व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों प्रकार के विकास में सहायता करना।

कोरोना काल में गतिविधियों के संचालन के लिए निम्नलिखित सावधानियां बरतें-

1. गतिविधियां करवाते समय यह सुनिश्चित किया जाए कि बच्चे अपना मास्क अच्छी तरह से पहने रहें।
2. निर्धारित मानकों के अनुसार सामाजिक दूरी का पालन करें।
3. गतिविधियां करवाते समय बच्चे एक-दूसरे का हाथ न पकड़ें एवं एक दूसरे के बेहद करीब न आएं।
4. गतिविधियों के संचालन के पहले एवं उसके पश्चात बच्चे अपने हाथों को अच्छे तरीके से साबुन से धोएं। समुदाय गतिविधि स्थल पर साबुन एवं पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करे।
5. यह भी सुनिश्चित किया जाना है कि गतिविधि करते समय छात्र अपने चेहरे को स्पर्श न करें, विशेषकर नाक, मुंह एवं आँखों को।
6. यह भी सुनिश्चित करें कि खांसी अथवा छींक आने पर रुमाल अथवा गमछे का प्रयोग अपने नाक एवम् मुंह को ढकने के लिए करें अथवा अपनी कोहनी से मुंह को ढकें।

गतिविधियों की रचना-

किसी भी विषय/प्रकरण से संबंधित गतिविधियों की रचना करने के संबंध में निम्नलिखित बिन्दु महत्वपूर्ण है -

- प्रकरण से संबंधित प्रमुख सूचनाएं एवं अवधारणाओं के संबंध में स्पष्टता।
- प्रकरण की समझ बनाने हेतु गतिविधि के उचित प्रकार एवं सिखाने के अनुभव के संबंध में स्पष्टता।
- गतिविधियों के संचालन हेतु क्रमबद्धता एवं उचित दिशा तय करना।
- विद्यार्थियों के अधिगम अनुभव से संबंधित फीडबैक प्राप्त करने के संबंध में उचित योजना बनाना।

गतिविधि का स्कीमा - किसी भी विषय/प्रकरण से संबंधित गतिविधियों की रचना एवं संचालन के संबंध में नीचे दिए गए प्रारूप (गतिविधि का स्कीमा) अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे शिक्षकों द्वारा गतिविधियों के चुनाव एवं रचना के संबंध में समझ उत्पन्न की जा सकती है –

गतिविधि का स्कीमा

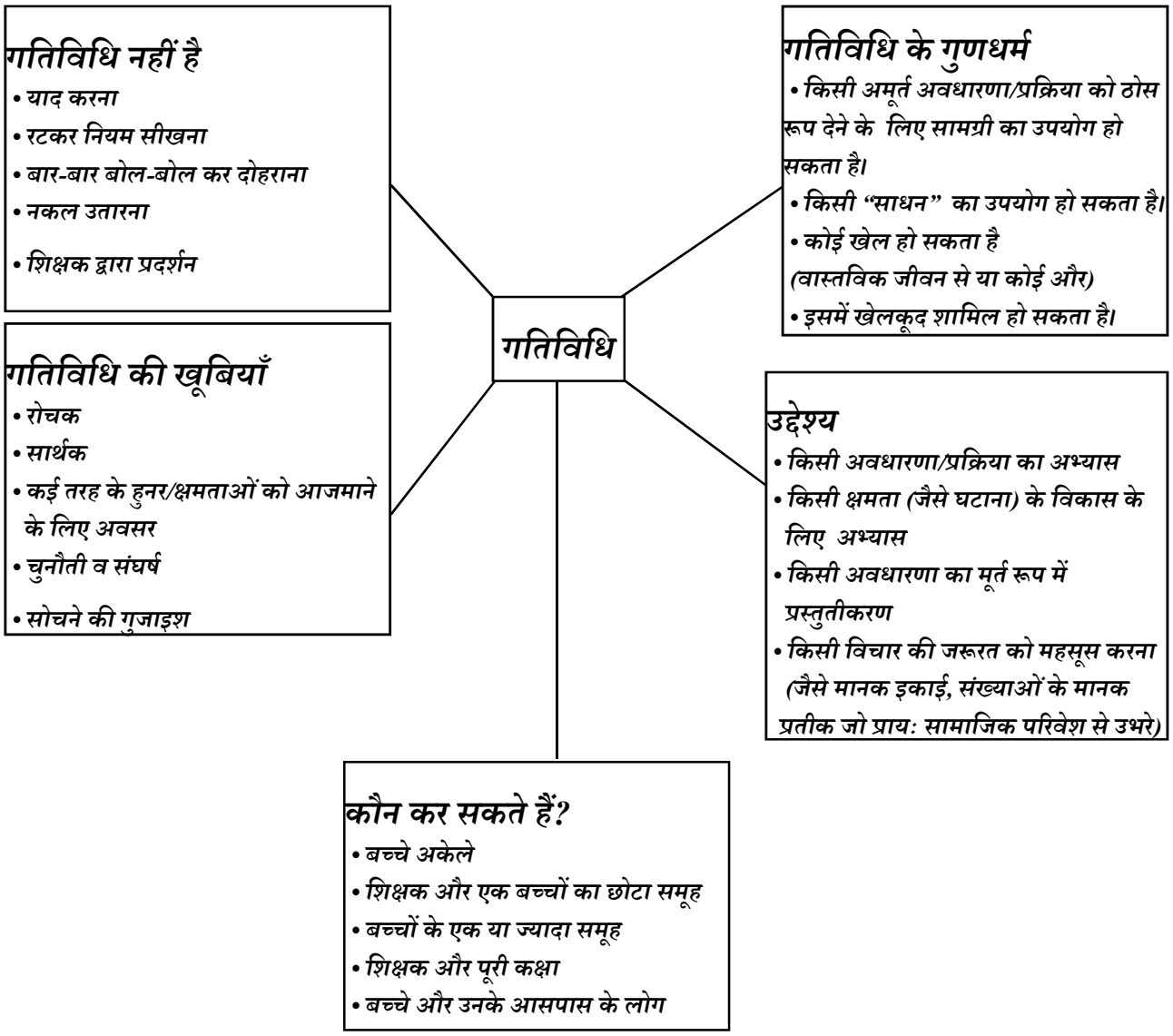

सुझावात्मक गतिविधि (विषय-गणित) -

<u>प्राथमिक कक्षाओं के संदर्भ में दक्षता</u> -सरल ज्यामितीय आकृतियां (त्रिभुज, आयत, वर्ग आदि) का परिमाप ज्ञात करना।

गतिविधि का संचालन

- उपलब्ध बच्चों की संख्या अनुसार उन्हें 4 - 4 के समूह अथवा सुविधानुसार बांट देगे-
- खुली जगह में चूने अथवा चॉक का प्रयोग कर विभिन्न आकृतियां बना लेंगे।
- प्रत्येक समूह को एक आकृति आवंटित करते हुए उस आकृति के ऊपर रस्सी को रखकर प्रयुक्त की गई रस्सी के भाग का मापन करेंगे।
- प्राप्त निष्कर्षो पर चर्चा करेगें।

सुझावात्मक गतिविधि (विषय-पर्यावरण) -

अधिगम दक्षताएं - (प्रकरण - दिशाएं एवं नक्शा)

- दाएं-बाएं, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे जैसी स्थितियों को समझना।
- पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाओं को समझना।
- आस-पास के स्थानों को संकेतो के पैर्टन में पहचानना जैसे अस्पताल, कुआँ, मंदिर, नदी, पार्क, विद्यालय एवं अन्य जानी पहचानी इमारतें एवं स्थान आदि।

गतिविधि का संचालन - बच्चों के आस-पास स्थित स्थानों, इमारतों आदि के संकेतों की सहायता से बच्चों के साथ मिलकर स्केच एवं नक्शा बनाना। बच्चों को समूह में बैठाकर प्रश्न पूछना -

प्र. 1 - कौन आपके पीछे बैठता/बैठती है?

प्र. 2 - कौन आपके आगे बैठता/बैठती है?

प्र. 3 - कौन आपके दायीं ओर बैठता/बैठती है?

प्र. 4 - कौन आपके बायीं ओर बैठता/बैठती है?

दिशाओं की पहचान -

अपने दोनों हाथों को फैलाकर सूर्य की ओर मुँह करके खड़े हो जाएं।

- आपके सामने पूर्व दिशा होगी।
- आपके पीछे पश्चिम दिशा होगी।
- आपके दाएं हाथ की तरफ दक्षिण दिशा होगी।
- आपके बांए हाथ की तरफ उत्तर दिशा होगी।

बच्चों को इस तरह के अनुभव करा कर चारों दिशाओं की पहचान करने का अवसर दे।

चर्चा - किसी एक बच्चे को लक्ष्य कर पूछना कि उसके घर से स्कूल आते समय क्या-क्या दिखाई पड़ता है?

गतिविधि आधारित शिक्षण के रोचक तरीके -

बच्चों को सक्रिय बनाए रखने के लिए हमें विभिन्न रोचक तरीकों का उपयोग करना होगा ताकि उनकी रुचि बनी रहे और उनका दिमाग सीखने के लिए सक्रिय बना रहे। आइए अब हम कुछ ऐसी ही प्रविधियों की चर्चा करें जिनका उपयोग हम विभिन्न विषयों को पढाने के दौरान कर सकते हैं.

1. **WH-टेम्पलेट (WH- Template) -** सीखने के क्रम में प्रश्न पूछना अथवा जिज्ञासा समाधान एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है। इस कड़ी को बेहतर ढंग से संपन्न करवाने में Wh टेम्पलेट मत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। WH प्रश्न है- What/ Where/ Why/ Who/ How/ Whose/ When आदि। प्रविधि के इस्तेमाल से बच्चो में संकोच या भय समाप्त होगा और प्रश्न पूछने की आदत पड़ सकती है और साथ ही हर प्रकरण से जुड़े विभिन्न तथ्यों की स्वयं जाँच- परख का माहौल तैयार होगा। इस प्रविधि के इस्तेमाल से निम्नलिखित कौशलो का विकास होगा - जिज्ञासा चिंतन, अनुसंधान, विश्लेषण, संश्लेषण, प्रस्तुतीकरण, स्व-मूल्यांकन, व्यव्हार।

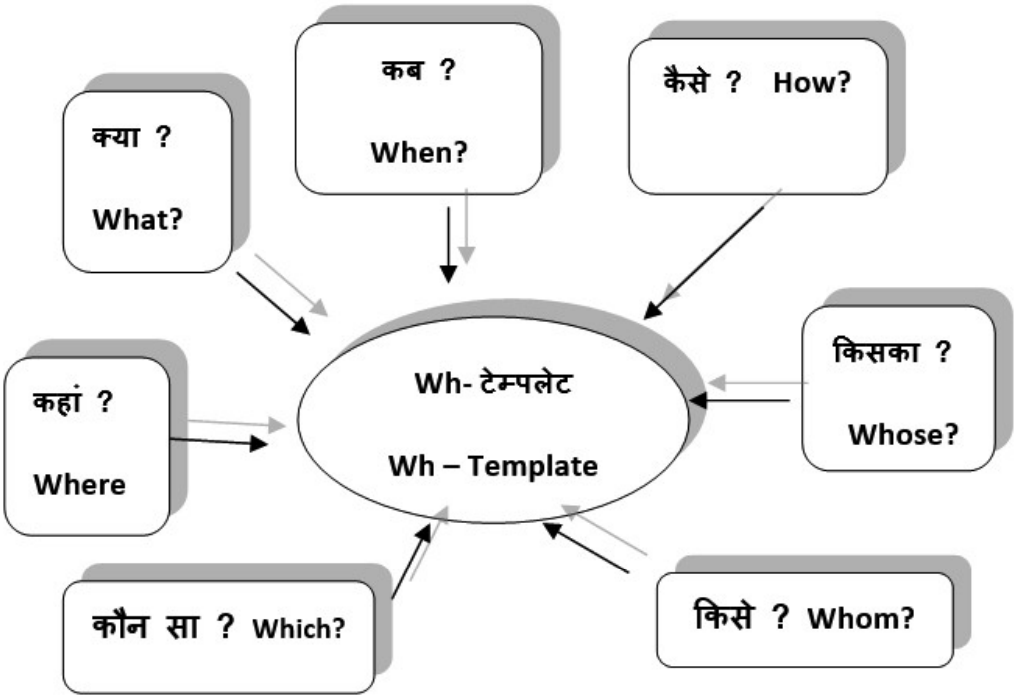

2. **माइन्ड मैप (Mind Map) -** किसी भी विषय के विभिन्न विषय-वस्तु पर उनकी प्रकृति एवं व्याख्या के आधार पर प्रमुख विचारों/तथ्यों/बिन्दुओं को चिन्हांकित किया जाए एवं उससे जुड़े हुए समस्त सहायक विचारों/तथ्यों/बिन्दुओं को रेखाचित्र के माध्यम से कम से कम शब्दों या चित्रों या प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए तो उसे माइंड मैप कहा जाता है।" माइंड मैप बनाने के पूर्व, उसकी संरचना को समझना आवश्यक होता है, जो की निम्नानुसार नियम के पालन से की जाती है, प्रकरण की प्रकृति एवं व्याख्या पर आधारित मुख्य विचार (Main Idea) या केन्द्रीय भाव का चिन्हांकन कर लें। मुख्य विचार (Main

Idea) से सीधे जुड़े सहायक विचार (Directly Connected to main Idea) को सूचीबद्ध कर लें। सहायक विचारों के समस्त विवरणों को सक्षिप्त रूप में नोट कर लें। उपरोक्त प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद माइंड मैप का निर्माण (रेखांकन) इस तरह से करें कि मुख्य विचार एकदम मध्य में रखें एवं सीधे जुड़े सहायक विचार- मुख्य विचार से जोड़ते हुए रेखांकित करें।

प्रकरणों का वर्गीकरण निम्नानुसार हो सकता है: 1.प्रमुख बिन्दु एवं उसकी व्याख्या 2. घटनाओं का क्रम 3. मुख्य विचार एवं उसके सहायक विचार 4. कारण और प्रभाव आधारित प्रकरण 5. वर्गीकरण आधारित प्रकरण 6. तुलना एवं सम्बन्ध 7. अवधारणा आधारित व्याख्या आदि। हम यह जानते हैं कि ज्ञान के संप्रेषण एक प्रभावी तरीका दृश्य माध्यम है और सक्रिय शिक्षण में माइन्ड मैप प्रविधि से विषय-वस्तु मे अंतर्निहित ज्ञान का संप्रेषण अत्यंत प्रभावी तरीके से होता है, जो हमारी स्मृति में लम्बे समय तक स्थाई हो जाता है, इसमें खास बात यह है कि, इसको देखकर पूरा प्रकरण तुरंत याद आ जाता है।

माइन्ड मैप (Mind Map) से निम्नानुसर कौशल विकसित होते है- अनुप्रयोग, विषय की शीघ्र समझ, चिंतन कौशल, स्मरण क्षमता, तार्किक क्षमता, प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण, संश्लेषण, सक्रियता से अध्ययन, संक्षेपीकरण एवं विस्तारीकरण।

परिवार में हमारे संबंधों के संदर्भ में उदाहरण के तौर पर माइंड मैप का निर्माण किया गया है जो नीचे वर्णित हैं -

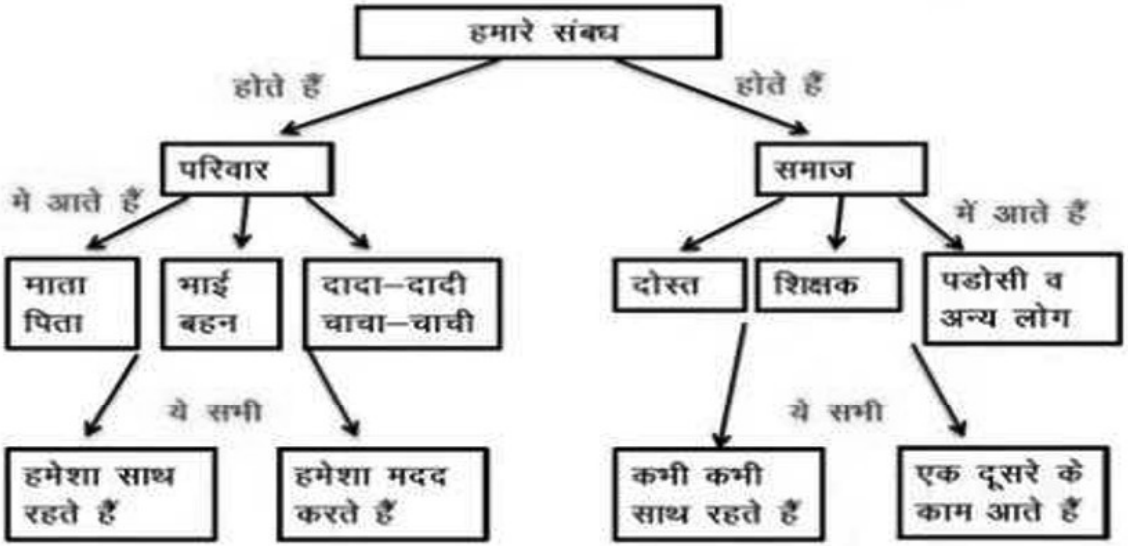

3. शैक्षिक खेल (Educational Games)- समय समय पर विद्यार्थियों को पढाई की बोरियत दूर करने और पढने में आनंद लाने के लिए विभिन्न शैक्षिक खेल खिलाए जा सकते हैं। इन शैक्षिक खेलों को खिलाने से न केवल विद्यार्थियों को आनंद आएगा वरन बच्चे विभिन्न अवधारणाओं को खेल के माध्यम से सीख सकते हैं। आपको पाठ के ऐसे अवधारणाओं/ क्षेत्रों की पहचान करनी होगी जहाँ आप शैक्षिक खेल खिला सकते हैं। इनका स्तर विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप होना चाहिए। हमें नियमित रूप से विभिन्न शैक्षिक खेलों का प्रदर्शन करते रहना चाहिए और विद्यार्थियों को भी नए नए खेल कराए जाने के अवसर दिए जाने चाहिए। शैक्षिक खेलों से कौशल निम्नानुसार विकसित होंगे - **i. सक्रियता से अध्ययन, ii. व्यक्तित्व विकास, iii. समूह भावना, iv. प्रस्तुतीकरण, v. स्व-स्फूर्त हल खोजना, vi. समय बन्धन में कार्य करना।**

4. क्विज (Quiz)- समय समय पर कुछ विशेष क्षेत्र निर्धारित कर विद्यार्थियों को क्विज कार्यक्रम के माध्यम से तैयारी करवाई

जा सकती है। गणित, विज्ञान एवं अन्य किसी भी विषय पर विद्यार्थियों को क्विज कार्यक्रम में सहभागी बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों के समूहों को भी प्रश्न आदि ढूँढने एवं क्विज कार्यक्रम करवाने के लिए आगे लाते हुए प्रोत्साहित किया जा सकता है। विभिन्न विषयों एवं भाषा को जोड़ते हुए भी मनोरंजक प्रश्न, पहेलियाँ आदि तैयार किए जा सकते हैं। क्विज के माध्यम से निम्नानुसार कौशल विकसित होंगे -

i. विषय की शीघ्र समझ ii. चिंतन कौशल iii. तार्किक क्षमता iv. प्रस्तुतीकरण v. भाषा में पकड़ vi. सक्रियता से अध्ययन vii. व्यक्तित्व विकास।

5. अंत्याक्षरी- इसमें विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुरूप भाषा या अन्य विषयों पर खेलने के लिए अवसर दिए जा सकते हैं। हिंदी अथवा अंग्रेजी में नए- नए शब्दों को पुनः याद करने, दोहराने में अंत्याक्षरी बहुत ही मददगार हो सकती है। इसी प्रकार विज्ञान एवं अन्य विषयों में भी अलग अलग तरीकों से अंत्याक्षरी का इस्तेमाल किया जा सकता है ।विभिन्न विषयों में अंत्याक्षरी खेलने के लिए विद्यार्थियों में क्रिएटिविटी का होना आवश्यक है । रचनात्मकता होने पर वे इस खेल को रुचिकर बनाते हुए सीखना एक रोचक अनुभव बना सकते हैं । अंत्याक्षरी के माध्यम से निम्नानुसार कौशल विकसित होंगे -

i. विषय की शीघ्र समझ ii. चिंतन कौशल iii. तार्किक क्षमता iv. प्रस्तुतीकरण v. सक्रियता से अध्ययन vi. व्यक्तित्व विकास vii. रचनात्मकता।

6. समस्या आधारित अधिगम (Problem Based Learning- (PBL)- इस प्रविधि के बारे में अधिक जानकारी के लिए आप स्वयं सोचना शुरु करें और अपने आस पास से जानकारी प्राप्त कर उपयोग करना प्रारंभ करें । यह प्रविधि बहुत ही प्रभावी होती है और इसमें हल किए जा सकने योग्य कोई वास्तविक समस्या को देकर विद्यार्थियों से उस समस्या का हल खोजने को कहा जाता है । इससे निम्नलिखित कौशल विकसित होते है - **i. विश्लेषण ii. संश्लेषण iii. सक्रियता से अध्ययन iv समूह भावना।**

7. जिगसॉ (JIGSAW) यह एक दूसरे से सीखने के लिए एक बहुत ही प्रभावी तकनीक है । इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार विभिन्न समूहों (गृह समूह) में बिठाया जाता है -

प्रत्येक समूह को किसी एक प्रकरण या मुद्दे पर कार्य करने को कहा जाता है। उस प्रकरण पर उस समूह के प्रत्येक सदस्य को कार्य करने के लिए आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया जाता है ताकि प्रत्येक सदस्य उस मुद्दे पर अपनी समझ हासिल कर सके। अब एक नया समूह बनाया जाता है जिसे 'जिगसा' समूह कहा जाता है। 'जिगसा' समूह में गृह समूह से प्रत्येक मुद्दे पर समझ हासिल किए हुए एक एक सदस्य शामिल होते हैं।

अब इस समूह में प्रत्येक सदस्य अपने समूह के अन्य सदस्यों को अपने - अपने पूर्व के समूह में समझ हासिल किए गए मुद्दे से संबंधित बातों को सिखाते हैं । इस प्रकार इस छोटे समूह में प्रत्येक सदस्य एक दूसरे को अपनी सीखी हुई बातों को सिखाते हैं । ऐसे में एक ही समय में बहुत सारे बच्चे अपने -अपने समूह में अपने सहपाठियों को नवीन बातें सिखाने का प्रयास करते हैं। इससे न केवल समय की बचत होती है वरन छोटे समूह में सीखना भी बेहतर ढंग से हो पाता है । जिगसा समूह में चर्चा उपरांत सभी सदस्य अपने अपने गृह समूह में वापस आकर पुनः सीखी गई बातों पर आपस में समझ बनाते हैं ।

===000===

वर्क शीट

वर्कशीट क्या है - वर्कशीट एक प्रकार का सुनियोजित अभ्यास प्रपत्र होता है जिसमें प्रश्न /गतिविधियाँ/ परियोजना कार्य आदि दिए जाते हैं। वर्कशीट शिक्षक के लिए सहायक सामग्री है जो बच्चों का ध्यान आकर्षित करने तथा उन्हें दबाव मुक्त होकर अपनी गति से स्वतंत्रता पूर्वक कार्य करने के लिए अवसर प्रदान करता है।

- वर्कशीट में दिए गए अभ्यास अवधारणा/कौशल आधारित होते हैं, जो बच्चों के अनुभवों पर या परिवेश पर आधारित होते हैं।
- वर्कशीट में दिए गए अभ्यासों को बच्चे अपने घर या विद्यालय में आसानी से कर सकते हैं। वर्कशीट में दिए गए अभ्यासों को बच्चे अपने अनुभवों से / अपने साथी समूह के साथ मिलकर/ अपने परिवार के सदस्यों के सहयोग से कर सकते हैं।
- वर्कशीट में दिए गए अभ्यास इस तरह होते हैं कि बच्चे स्वयं करके सीखते हैं, वे स्वयं रटने की प्रवृति से दूर होते हैं जिससे ज्ञान का निर्माण होता है। वर्कशीट सचित्र, रंगीन अथवा रंग भरने के उद्देय से भी बनाई जाती है, जिससे अवधारणायें स्पष्ट होने के साथ बच्चे को कार्य करने में आनंद भी आता है।
- वर्कशीट के प्रश्न प्रायः पाठ से सबंधित खुले (सब्जैक्टिव) होते हैं जिनके उत्तर बच्चे अपने अनुभवों के आधार पर दे सकते हैं तथा उनकी व्याख्या भी कर सकते हैं।

वर्कशीट क्यों आवश्यक है ?

- सतत् अभ्यास से बच्चे के सीखने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- बच्चे स्वयं करके सीखते है जिससे रटने की प्रवृति से दूर होते हैं।
- बच्चों के लिए सीखना बोझिल न होकर आनंददायी होता हैं।
- बच्चे पढ़ाई के साथ ही साथ अन्य व्यक्तिगत/ सामाजिक गुणों को सहजता से सीखते हैं।
- वर्कशीट के माध्यम से शिक्षकों को बच्चों के पूर्व ज्ञान, सीखने की प्रक्रिया एवं सीखने की प्रगति का पता चलता हैं।
- बच्चे में अंतर्हित कौशलों का पता चलता है जिनके विकास में शिक्षक बच्चों को सहयोग कर सकते हैं।

वर्कशीट का उपयोग कैसे करें -

वर्कशीट का उपयोग निम्नलिखित तीन आधारों पर किया जा सकता है -

- बच्चों के पूर्व ज्ञान को जानने के लिए
- सतत् अभ्यास के लिए
- आकलन के लिए
- बच्चों के पूर्व ज्ञान को जानने के लिए - बच्चों के पूर्व ज्ञान को जांचने के लिए वर्कशीट के कुछ प्रश्न ऐसे हो सकते हैं जिन्हें बच्चे अपने अनुभवों से/ परिवेश के आधार पर हल कर सकते हैं/ लिख सकते है। इससे शिक्षक को पाठ को पढ़ाने के पूर्व उस पाठ के बारे में बच्चा कितना जानता है यह पता चलता है तथा सीखने के वातावरण का निर्माण होता है।

उदाहरण - जल पाठ पढ़ाने के पूर्व बच्चे की जल से सबंधित जानकारी पर आधारित प्रश्न ऐसे हो सकते हैं- पानी कहाँ – कहाँ मिलता हैं? पानी का उपयोग कहाँ – कहाँ किया जाता है? आदि।

- **सतत् अभ्यास के लिए** – कुछ अवधारणाओं को पुष्ट करने हेतु बार-बार अभ्यास की आवश्यकता होती है, विशेष कर गणितीय संक्रियाओं में इस हेतु वर्कशीट के प्रश्न इस प्रकार के हो सकते हैं।

  उदाहरण - गुणन संबंधी अवधारणा पर आधारित प्रश्न हो सकते है –

  $5 \times 2 = 10$, $9 \times 5 = 45$, $8 \times 5 = 40$

- **आकलन के लिए-** बच्चे ने क्या सीखा यह जानने हेतु आकलन किया जाता हैं। आकलन का उद्देश्य बच्चों को फेल या पास करना या अंक देना नहीं है, इससे यह पता चलता है कि बच्चे ने कितना सीखा। उसे सीखने में कहाँ -कहाँ कठिनाईयाँ आ रही है। इससे बच्चों के साथ साथ शिक्षकों को भी फीडबैक मिलता हैं यदि अधिकांश बच्चे नहीं सीख रहे है तो निश्चित तौर पर शिक्षकों को अपने प़ढा़ने के तरीकों में बदलाव करना होगा।

  उदाहरण - 'जल' पाठ पढ़ाने के बाद बच्चे ने कितना समझा, यह जानने के लिए निम्नलिखित प्रश्न पूछे जा सकते हैं-

  - जल के बचाव के लिए आप क्या उपाय करोगें?
  - आपके घर में जल कहां से आता है?
  - यदि मुहल्ले के सार्वजनिक नल का पानी बह रहा है तो आप क्या करोगे?

वर्कशीट का उपयोग कैसे करें?

1. वर्कशीट का उपयोग पाठ की प्रकृति के अनुसार किया जाए।
2. वर्कशीट का उपयोग पूर्ण ज्ञान के लिए, आकलन के लिए या अभ्यास के लिए किया जा सकता है। यह पाठ की विषयवस्तु पर निर्भर करता है।
3. वर्कशीट बच्चों को देने के बाद उस पर चर्चा अवश्य करें कि उन्हें करना क्या है?
4. वर्कशीट का उपयोग कक्षा कार्य या गृह कार्य में दिया जा सकता है।
5. वर्कशीट का उपयोग बच्चे, समूह में या व्यक्तिगत रूप से भी कर सकते है। यह वर्कशीट की प्रकृति पर निर्भर होता है।

उदाहरण - छत्तीसगढ़ के दर्शनीय स्थलों की जानकारी

छत्तीसगढ़ के दर्शनीय स्थलों से संबंधित किन्हीं 10 चित्रों को संकलित कर तालिका में दिए गए बिन्दुओं के आधार पर जानकारी एकत्रित करें -

क्र.	*चित्र*	*चित्र का नाम*	*चित्र कहाँ का है*	*महत्वपूर्ण जानकारी*	*संरक्षण के उपाय*
उदा. 1		*लक्ष्मण मंदिर*	*महासमुंद जिले के सिरपुर का*	*बौद्ध धर्म का केंद्र था*	*मूर्ति को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए*
2					
3					
4					
5					
6					
7					
8					
9					
10					

यह एक आनंददायी गतिविधि होने के साथ- साथ बच्चों को सीखने में मदद करती है, तथा बच्चों के नैतिक मूल्यों के विकास में भी सहायक है।

===000===

आकलन के उपकरण

आकलन क्या है?

कक्षा में पढ़ाने के उपरांत एक शिक्षक को यह जानना जरूरी होता है कि मेरे द्वारा पढ़ाए गए पाठ को कितने बच्चों ने समझा कितने बच्चों को समझने में कठिनाई हो रही है यह जानने के लिए आकलन किया जाता है। इस आकलन का आशय फेल या पास करना अथवा अंक देना नहीं है। यदि कक्षा के अधिकांश बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं तो शिक्षक अन्य तरीकों से पाठ को समझाते है, यह आकलन दो प्रकार से किया जाता है पाठ को पढ़ाने के साथ-साथ प्रतिदिन जो आकलन किया जाता है उसे फॉरमेटिव (रचनात्मक) आकलन कहते हैं। यह कई तरीकों से किया जा सकता है जैसे- गतिविधि के माध्यम से मौखिक, लिखित आदि।

एक निश्चित अवधि के पश्चात् किये जाने वाले आकलन को समेटिव आकलन (योगात्मक) कहते हैं। यह लिखित रूप से किया जाता है।

फॉरमेटिव आकलन का उपकरण -

फॉरमेटिव आकलन का मुख्य उद्देश्य यह जांचना है कि बच्चे ने सीखा है या नहीं, बच्चे को सीखने में कहां कठिनाई हो रही है, एवं कठिनाई का पता लगाकर बच्चे को सीखने में मदद करना है। फॉरमेटिव आकलन कई तरीकों से किया जाता हैं, मौखिक, लिखित, अभिनय, कक्षा कार्य, गृह कार्य की कॉपी जांच कर आदि।

- मौखिक - इसके अंतर्गत पाठ को पढ़ाने के बाद उस विषयवस्तु से संबंधित चर्चा कर/ अनुभवों को सुनकर या प्रश्न पूछकर बच्चों का आकलन किया जा सकता है।
- लिखित आकलन - लिखित आकलन कक्षा कार्य या गृह कार्य के रूप में दिया जा सकता हैं इसके प्रश्न कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे खाली स्थान भरो, सही जोड़ी मिलाओ, प्रश्नों के उत्तर लिखो आदि।
- अभिनय - अभिनय के माध्यम से भी बच्चों का आकलन किया जा सकता है। यह विषय की प्रकृति पर निर्भर करता हैं जैसे - विभिन्न महापुरूषों का अभिनय करो तथा उनसे संबंधित कोई एक डॉयलाग बोलो।
- चित्र बनाओ - चित्रों के माध्यम से भी बच्चों का आकलन किया जा सकता है। चित्र अभिव्यक्ति का माध्यम हैं जैसे पेड़ पौधे का चित्र बनाकर उनके अंगों के नाम लिखो।
- चित्र देखकर लिखो - बच्चों को कोई भी चित्र देकर उस पर अपने विचार लिखने के लिए देकर आकलन किया जा सकता है इससे बच्चों की सृजनशीलता का विकास होता है।
- स्क्रैप बुक - स्क्रैप बुक भी आकलन करने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपकरण है। इसका उपयोग हर विषय में किया जा सकता है जैसे - रंगीन कागज से विभिन्न आकृतियों के चित्र बनाकर चिपकाओ।
- स्वआकलन - बच्चे स्वयं अपना ही आकलन कर सकते हैं कोई भी कार्य करने के बाद बच्चे स्वयं सोचे कि उसके द्वारा किए गए कार्य में कहाँ-कहाँ गलतियाँ थी तथा उस कार्य को और कैसे बेहतर बनाया जा सकता है।

उदाहरण - शरीर के अंगों के बारे में पढ़ाने के बाद निम्न उपकरणों के माध्यम से आकलन किया जा सकता है -

मौखिक -

- आपके शरीर में अंग कौन-कौन से है?
- हाथों से कौन कौन सा काम होते हैं?
- यदि एक हाथ न हो तो क्या-क्या परेशानियाँ हो सकती है ?

लिखित उपकरण – लिखित आकलन, गृह कार्य, कक्षा कार्य के रूप में दिया जा सकता है, इसके प्रश्न कई प्रकार के हो सकते हैं। जैसे- खाली स्थान भरो, जोड़ी मिलाओं प्रश्नों के उत्तर दो आदि।

- खाली स्थान भरो-

  आँख का मुख्य कार्य _____ है।

- सही या गलत -

  पैरों से हम लिखते हैं (सही /गलत)

- प्रश्न- उत्तर

  मुहं के कोई दो कार्य लिखो।

- दिए गए शब्दों में जो अलग है उस पर गोला लगाओ -

  नाक, कान, गला, चलना

* चित्र बनाओ - मनुष्य के शरीर का चित्र बनाकर उनके अंगों के नाम लिखो।

===000===

शिक्षा व संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। बच्चे परिवार में होने वाले विभिन्न परंपराओं और संस्कृतियों को आत्मसात करते हुए अपना विकास करते है इसलिए संस्कृति को शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता।

कला एवं संस्कृति के साथ शिक्षा क्यों जरूरी है-

- शिक्षा और संस्कृति के जुड़ाव के लिए।
- व्यावहारिक ज्ञान के लिए।
- सीखने की प्रक्रिया को रोचक और आनंददायी बनाने के लिए।
- मूल्यों के विकास के लिए।
- परंपराओं के संरक्षण के लिए।
- ज्ञान के स्थायित्व के लिए।
- सीखने की गति को तेज करने के लिए।

हमारे समाज में बहुत सारे लोग कला क्षेत्र से जुड़े हैं जिनका उपयोग हम कला शिक्षा से जोड़कर बच्चों को सीखने में मदद कर सकते हैं। ज्ञान व बुद्धिमत्ता दो अलग-अलग चीजें हैं। समुदाय में हम जब व्यापक दृष्टिकोण डालते है तो बहुत सी ऐसी चीजें दिखाई देती है जिसमें कुछ लोग पढ़े लिखे भले ना हो परंतु ज्ञान व बुद्धिमत्ता में पढ़े लिखे लोगों से बेहतर दिखाई देते हैं। ऐसे ही बुद्धिमान लोगों को समाज से ढुंढ़कर कला शिक्षा से जोड़ सकते हैं। घरों में हमारी नानी, दादी भले ही पढ़ी लिखी ना हो परंतु उनके पास जो लोक कहानियाँ है उन लोक कहानियों से बच्चों में ज्ञान के साथ-साथ नैतिकता का विकास कर सकते है।

इस तरह से लोक संस्कृति में उपलब्ध संसाधन बच्चों के सीखने- सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग हो सकते हैं। जरूरत है लोक जीवन और लोक संस्कृति के उन संसाधनो को चिन्हांकित करने की। यह संसाधन निम्न लिखित हो सकते हैं -

- स्थानीय त्यौहार जैसे - हरेली, पोला, तीजा, छेर-छेरा आदि
- स्थानीय लोक गीत एवं संगीत जैसे - विवाह गीत, त्यौहार के गीत आदि
- लोक नृत्य जैसे - करमा, सुवा, गेड़ी, पंथी आदि
- स्थानीय व्यंजन जैसे - ठेठरी, खुर्मी, फरा, चीला आदि
- हस्तशिल्प जैसे - बेल मेटल, बाँस कला, टेराकोटा, काष्ठ कला, धातु शिल्प, छपाई कला आदि
- आभुषण, वेश-भूषा जैसे - बांधा, सुटा, फुली, बाली आदि
- खेती में काम आने वाले औजार
- ऐतिहासिक स्थल जैसे - सिरपुर, भोरमदेव आदि
- मूर्तिकला
- रंग मंच जैसे - पंडवानी, नुक्कड़ नाटक
- कठपुतली कला
- ओरेगामी

समुदाय में ऐसे लोगों का चिन्हांकन करें जो, इन कलाओं में निपुण हो उन्हें आमंत्रित कर बच्चों को सीखने के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

- स्कूल में लोक संस्कृति के स्थानीय कलाकारों को आमंत्रित करके कला का प्रदर्शन करवा सकते है। प्रदर्शन पश्चात् सीखने की प्रक्रिया पर चर्चा करा सकते हैं। प्रतिदिन उस मोहल्ले के बुजुर्ग महिला व पुरूष को आमंत्रित कर लोक कहानियाँ सुनाने के लिए कह सकते हैं। सुनी हुई कहानियों पर चर्चा करायी जा सकती है जिससे सीखने को संज्ञानात्मक, मनोप्रेरणात्मक एवं भावात्मक बनाया जा सके।

- बच्चों में रचनात्मक रूचियाँ जागृत करने के लिए उन्हे क्रेयान, पोस्टर रंग, चॉक, मिट्टी, पानी में घुलने वाले रंग, कुछ रंगीन पेपर, रंगीन पत्रिकाएँ, समाचार पत्रों, कैलेण्डरों इत्यादि से कोलॉज बना सकते है। इस कार्य में माता-पिता सहयोग कर सकते हैं।

- बच्चे प्रकृति तथा पर्यावरण से संबंधित फूल -पौधों, पशु-पक्षियों का चित्रांकन, स्वतंत्र रूप से रेखांकन, पुस्तकों का आवरण,फोल्डर,रंगाई छपाई, कशीदाकारी, रंगोली, अल्पना, मेंहदी, पुष्प सज्जा, बेकार की वस्तुओं से बनी सामग्री आदि बच्चों द्वारा बनाई गई सामग्री की हस्तशिल्प प्रदर्शनी लगाई जा सकती है। इस कार्य में समुदाय सहयोग कर सकते हैं।

इसी तरह उस गाँव में रहने वाले कारीगर बढ़ई, कुम्हार, लोहार, बसोड़ व्यक्तियों को चिन्हांकित कर केन्द्र पर आमंत्रित कर बच्चों को इन कलाओं की जानकारी दें। जिससे बच्चों में इन कारीगरों के प्रति भी सम्मान की भावना विकसित हो।

सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए हमें समुदाय के साथ पर्व और उत्सव मनाना चाहिए। बच्चों को समुदाय के द्वारा हमारे संस्कृति, रीतिरिवाज, तीज- त्यौहार की जानकारी,स्थानीय व्यंजन तथा वेशभूषा के बारे में जानकारी दी जा सके। बच्चें अपनी बड़े- बुजुर्गो से विवाह और तीज - त्यौहारो में गाये जाने वाले गीतो को सीखे और तीज त्योहारों से जुड़े किस्से कहानियाँ के बारे में जाने।

भौतिक पर्यावरण एवं आस पास के वातावरण को सजाना और स्वच्छ रखना भी हमारी संस्कृति का हिस्सा है। बच्चें अपनी कक्षा, विद्यालय, घर की दीवारों पर पेंटिंग, रंगोली, अल्पना आदि बनाकर स्वच्छ एवं सुसज्जित रख सकते हैं। इस कार्य के लिए हम समुदाय की मदद ले सकते हैं।

प्रत्येक सामुदायिक विद्यालय में एक मंच ऐसा होना चाहिए जहाँ उनकी सृजनात्मक एवं कलात्मक प्रतिभा को पूर्ण अभिव्यक्ति मिल सके,जिसके लिए सप्ताह में एक दिन गीत, संगीत, नाटक, नृत्य आदि का आयोजन किया जा सकता हैं।

===000===

समुदाय के साथ अन्तःक्रिया
(Interaction with Community)

विषय प्रवेश- शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन के लिए विद्यालय और समुदाय का मिलकर काम करना एक सार्थक प्रयास माना गया है।

विद्यालय और समुदाय साथ मिलकर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया संचालित करें, तो स्थानीय ज्ञान और कौशल हमारी शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनेंगे।

सीखने की प्रक्रिया के अभिन्न अंग हैं- आस-पास का वातावरण, प्रकृति, वस्तुएँ, समुदाय से कार्य और भाषा, दोनों के माध्यम से आपसी बातचीत करना आदि।

बच्चों के द्वारा अपने दोस्तों या बड़ों के साथ काम करना, उनको सुनना, उनसे पूछना, उनके साथ गतिविधियाँ करना ये कुछ ऐसी महत्वपूर्ण क्रियाएँ हैं, जिनसे सीखना संभव होता है।

सीखना तब और रोचक और स्थायी होता है, जब विभिन्न व्यवसाय, काम-धन्धे, कौशलों और सेवाएँ से जुड़े लोग हमारे बच्चों से जुड़ते हैं और उनके साथ अंतःक्रिया करते हैं। समूह में सुनना, जो काम दिया गया है उसे पूरा करना, सामूहिक रूप से जिम्मेदारी लेना, ये ज्ञान प्राप्त करने के ही नहीं बल्कि कला और कौशल सीखने के महत्वपूर्ण पहलू हैं।

समुदाय से अन्तःक्रिया क्यों ?

बहुश्रेणी और बहुस्तरीय कक्षा की स्थिति में एक अच्छी, बाल केन्द्रित कक्षा का निर्माण करने या उसका संचालन करने के लिए समुदाय को जोड़ना एक श्रेष्ठ उपाय हो सकता है, क्योंकि एक ही गतिविधि से विभिन्न आयु वर्ग और विभिन्न स्तर के बच्चों को हम एक साथ सिखा और समझा सकते हैं। विषय पर उनकी समझ बना सकते हैं। सीखने-सिखाने की यह प्रक्रिया जो समुदाय के सदस्यों के द्वारा शिक्षक के साथ पूर्व समन्वय कर संचालित की जाती है, सुनिश्चित करती है कि बच्चे पाठ्य-पुस्तकों, शिक्षकों के अलावा अन्य स्रोतों से ज्ञान, कौशल, मूल्य, संस्कृति, सार्थक परम्पराओं को प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण - सामाजिक विषय के अन्तर्गत बच्चे सीधे ग्राम पंचायत के सदस्यों से संपर्क-संवाद कर सकते हैं, यह भी हो सकता है कि उन्हें विद्यालय में आमंत्रित किया जाए और वे बच्चों को विस्तार से बताएँ कि पंचायती राज ने स्थानीय समस्याओं को हल करने और गांव का विकास करने में कैसे कार्य किया। पंचायत का गठन कैसे किया जाता है ? पंचायत के सदस्य बनने की योग्यता क्या-क्या है ? पंचायत चुनाव किस तरह सम्पन्न होते हैं?

समुदायों का सांस्कृतिक स्रोत भी समृद्ध होता है। उनके पास उनकी अपनी लोक कथाएँ, लोक गीत, चुटकुले, लोक कलाएँ, लोक शिल्प, लोक नाट्य, नाटक, कहानियाँ होती हैं, उनके पास गाँव का मौखिक इतिहास भी होता है। ये सभी हमारे संदर्भ स्रोत, हमारे संसाधन हो सकते हैं इसलिए समुदाय के साथ एक सार्थक रिश्ता बनाने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। परन्तु शर्त है कि हम बहुत ही सर्तकता और संवेदनशीलता से उनके साथ जुड़ें, उन्हें बच्चों के साथ वार्तालाप करने और सिखाने के लिए तैयार करें।

समुदाय से अन्तःक्रिया कैसे -

कब, कहाँ और कितने समय के लिए, किस विषय पर हमें समुदाय से किस स्रोत व्यक्ति को आमंत्रित करना है, इसका चयन बहुत सावधानीपूर्वक करना होगा, जिससे हमारी कक्षा एक सार्थक, गुणवत्तायुक्त कक्षा का आकार ले सके।

उदाहरण- मशीनों के अध्याय में स्थानीय मैकनिक को बुलाया जा सकता है, जो अपने अनुभव की जानकारी बच्चों को दें और यह भी बताएँ कि उसने मशीन (साइकिल, रेडियो या मोबाइल) आदि बनाना कहाँ से सीखा।

उदाहरण- हम किसी किसान को आमंत्रित कर सकते हैं, जो कृषि से संबंधित ज्ञान और कौशल जैसे- बीजारोपण, फसल कटाई, भण्डारण आदि की जानकारी बच्चों को दे सके। कृषि से संबंधित औजारो का भी वर्णन और प्रदर्शन कर सके। हमारे थोड़े से प्रयासों से यह कक्षा एक जीवन्त कार्यशाला का स्वरूप भी ग्रहण कर सकती है।

हमारे परिवेश में विभिन्न कामों और कौशलों से जुड़े व्यक्ति हैं जिनका चिन्हाकंन हमें स्रोत व्यक्ति के रूप में करना चाहिए, कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं-

किसान, बढ़ई, राजमिस्त्री, लोहार, कुम्हार, चित्रकार, मूर्तिकार, सरपंच, पंच, पंचायत सचिव, पार्षद, पोस्ट मास्टर, डाकिया, बैंककर्मी, लोक कलाकार, शिल्पकार, नाट्यकर्मी, समाज सेवी, महाविद्यालय के विद्यार्थी, विद्यालय के पूर्व छात्र-छात्राएँ, माताएँ, पुलिस, योग और खेलों से जुड़े व्यक्ति, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी कार्यों से जुड़े व्यक्ति। आइए, कुछ उदाहरण लेकर विषय का विस्तार करते हैं।

योग- अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए विभिन्न शारीरिक गतिविधियों को करने की आवश्यकता होती है, जिसमें खेल, व्यायाम, योग करना, संतुलित भोजन, अच्छी आदतें आदि शामिल हैं। यह जानकारी समुदाय के किसी योग से जुड़े व्यक्ति या योग शिक्षक/शिक्षिका के द्वारा बच्चों को प्रदान की जा सकती है। बच्चों को अति सरल और आसानी से किए जाने वाले योग अभ्यासों की जानकारी भी दी जा सकती है, जिससे वे इन सरल योग अभ्यासों को कर सकें।

समाज उपयोगी विभिन्न योजनाओं की जानकारी -

समाज का कोई भी जानकार व्यक्ति जैसे- पंच, सरपंच, संबंधित विभाग के सदस्य किसान मित्र, पशु मित्र/सखी इस तरह की समाज उपयोगी कार्यों/योजनाओं की जानकारी बच्चों को प्रदान कर सकते हैं, जिससे बच्चे गांव के विकास आधारित सामाजिक, आर्थिक योजनाओं के संबंध में सटीक जानकारी प्राप्त कर अपनी समझ को पुख्ता कर सकें। बच्चे समझ सकेंगे कि किस प्रकार के हमारे कार्यों से स्वयं और गांव का विकास हो सकता है। गांव की अर्थव्यवस्थता सुदृढ़ हो सकती है।

उदाहरण- ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों जैसे-नरवा (नदी-नाले), गरूवा (पशुधन), घुरूवा (जैविक खाद, बायो कपोस्ट), बाड़ी (घर की बाड़ी में फल-सब्जी उगाना) की जानकारी, महत्व और लाभ बताना।

समुदाय से अन्तःक्रिया का महत्व-

- ❖ बच्चों में विभिन्न कामों एवं उनसे संबंधित दक्षताओं के प्रति सम्मान: हमारे इन सभी कार्यो से एक महत्वपूर्ण उद्देश्य अपने आप पूरा होता चला जायेगा वह है, बच्चों में इन कामों, दक्षताओं (कौशलों) के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास। जैसे-जैसे बच्चे समाज में इन कामों और कौशलों का महत्व समझते जायेंगे, वैसे-वैसे इन कामों के प्रति उनका सम्मान बढ़ता जायेगा।
- ❖ हमारे इन प्रयासों से बच्चे समाज में पाये जाने वाले विभिन्न कार्य कौशलों से परिचित होंगे साथ ही उनमें अपने कैरियर संबंधी जागरूकता का विकास भी होगा। बहुत सारे बच्चे इनमें अपना कैरियर तलाश कर लें और आगे चलकर समाज के स्वावलम्बी नागरिक के रूप में समाज के विकास में अपना योगदान दें।
- ❖ समुदाय से अन्तःक्रिया करने पर हमारी शिक्षण प्रक्रिया पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ कक्षा के बाहरी परिवेश में सम्पन्न होगी। समुदाय के ज्ञान का लाभ बच्चों को मिलेगा, बच्चे सक्रिय होकर आनंदपूर्वक अपनी पढ़ाई कर सकेंगे।

सीखने-सिखाने के वातावरण को बच्चों के अनुकूल बनाने के क्रम में स्थानीय समाज से स्कूल के संबंधों को मजबूत करना एक उचित प्रयास हो सकता है। विभिन्न शिक्षा आयोगों ने भी इसकी अनुशंसा की है। इन प्रयासों से बच्चों को क्षमतावान बनाने वाले वातावरण का निर्माण करने में मदद मिलेगी, साथ ही बच्चों में निहित विभिन्न क्षमताओं का विकास भी किया जा सकेगा।

===000===

देश हमारा सबसे प्यारा

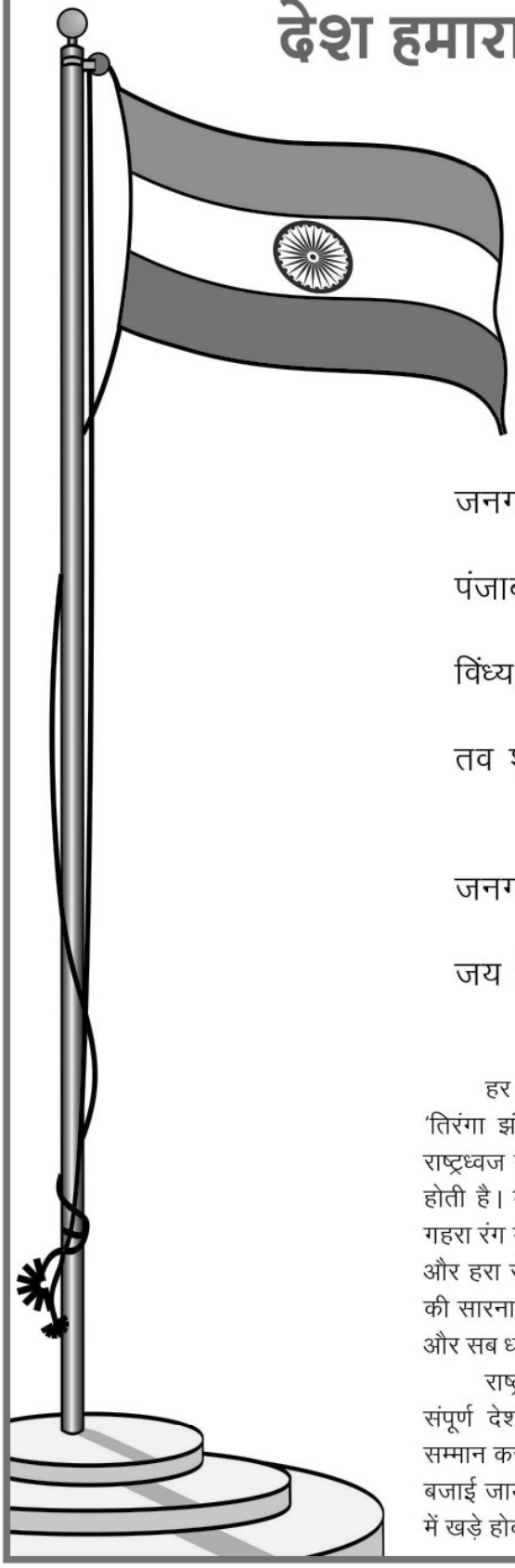

राष्ट्रगान

जनगणमन–अधिनायक जय हे,
भारत–भाग्य–विधाता!
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि–तरंग!
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत–भाग्य–विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय जय जय, जय हे!

हर देश का अपना एक विशिष्ट झंडा और राष्ट्रगान होता है। 'तिरंगा झंडा' भारतवर्ष का राष्ट्रध्वज है और 'जनगणमन' राष्ट्रगान। राष्ट्रध्वज में ऊपर की पट्टी केसरिया रंग की और नीचे की हरे रंग की होती है। बीच की सफेद पट्टी के बीचों बीच 24 शलाकाओं का नीले गहरा रंग में गोल–चक्र होता है। केसरिया रंग त्याग का, सफेद शांति का और हरा रंग प्रकृति की सुंदरता का प्रतीक है। चक्र का स्वरूप अशोक की सारनाथ–स्थित सिंहमुद्रा में अंकित चक्र की भाँति है। यह चक्र सत्य और सब धर्मों का प्रतीक है।

राष्ट्रगान की रचना गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी। इसमें संपूर्ण देश के लिए मंगल–कामना है। राष्ट्रगान और राष्ट्रध्वज का सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य है। जब राष्ट्रगान गाया जाय या उसकी धुन बजाई जाय अथवा राष्ट्रध्वज फहराया जाय, तब हमें सावधान की स्थिति में खड़े होकर इसे सम्मान देना चाहिए।

नोवल कोरोनावायरस (COVID-19)

खुद रहें सुरक्षित, दूसरों को रखें सुरक्षित

क्या करें और क्या ना करें

क्या करें ✓

बार-बार हाथ धोएं। जब आपके हाथ स्पष्ट रूप से गंदे न हों, तब भी अपने हाथों को अल्कोहल - आधारित हैंड वॉश या साबुन और पानी से साफ करें

छींकते और खांसते समय, अपना मुंह व नाक टिशू/रूमाल से ढकें

प्रयोग के तुरंत बाद टिशू को किसी बंद डिब्बे में फेंक दें

अगर आपको बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई है तो डॉक्टर से संपर्क करें। डॉक्टर से मिलने के दौरान अपने मुंह और नाक को ढंकने के लिए मास्क/कपड़े का प्रयोग करें

भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें

क्या न करें ✗

यदि आपको खांसी और बुखार का अनुभव हो रहा हो, तो किसी के साथ संपर्क में ना आयें

अपनी आंख, नाक या मुंह को ना छूयें

सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें

हम सब साथ मिलकर कोरोनावायरस से लड़ सकते हैं